नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

परिवहन विशेष

www.newsparivahan.com

वर्ष 04, अंक 206, नई दिल्ली, शनिवार 31 अक्टूबर 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जीवन में सफलता केवल ऊँचा उठने में नहीं, बल्कि ऊँचा उठकर दूसरों को सहारा देने में है। सच्ची महानता वही है, जो दूसरों के जीवन में आशा, विश्वास और खुशियाँ भर दे।

02 खुशियों के दीप जलाएँ, प्रदूषण दूर भगाएँ: परंपराओं के साथ पर्यावरण संरक्षण

06 बदलती विवाह परंपराएँ और टूटती गाँवों की सामाजिक एकता

08 कोयला की भूमिगत आग बनेगा स्वच्छ ऊर्जा, गिनीज बुक में नाम होगा दर्ज

1 नवंबर से दिल्ली में संशोधित GRAP नियम लागू - गैर BS-VI वाहनों के प्रवेश पर प्रतिबंध

पर्यावरण विभाग अधिसूचना दिनांक 23.06.2026 के तहत सख्ती - BS-VI, CNG, Electric को ही अनुमति

रिपोर्ट विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र

मुख्य तथ्य:

- लागू तिथि: 01.11.2026 से 31.01.2027 तक (शीतकालीन प्रदूषण नियंत्रण)
- अधिसूचना: पर्यावरण विभाग, दिल्ली सरकार, 23.06.2026
- ट्रैफिक हेल्पलाइन: 011-25844444 / 1095, आपात पुलिस सहायता: 112

कौन-सी गाड़ियाँ चल सकती हैं (अनुमति प्राप्त):

1. BS-VI मानक वाली गाड़ियाँ, CNG, इलेक्ट्रिक वाहन
2. अधिसूचना में छूट प्राप्त वाहन - लागू नियमों के अधीन

कौन-सी गाड़ियाँ नहीं चल सकेंगी (प्रतिबंध):

1. BS-VI से कम मानक वाले वाहन - दिल्ली में प्रवेश की अनुमति नहीं
2. वैध PUCC के बिना कोई भी वाहन - BS-VI वाहन भी PUCC के बिना प्रवेश नहीं कर सकेगा
3. दूसरे राज्यों की BS-VI से कम मानक वाली अंतरराज्यीय बसें - प्रवेश प्रतिबंधित
4. नॉन-डेस्टिनेशन ट्रक - जिन ट्रकों का गंतव्य दिल्ली नहीं है, वे Eastern/Western Peripheral Expressway या वैकल्पिक मार्गों का उपयोग करें
5. ट्रैक्टर और जुगाड़ वाहन - लागू प्रतिबंधों के अनुसार प्रवेश नहीं

जनहित अपील: यात्रा से पहले अपने वाहन की पात्रता जाँच लें, PUCC अपडेट रखें, और दिल्ली ट्रैफिक पुलिस की आधिकारिक एडवाइजरी का पालन करें।

संपादकीय टिप्पणी: GRAP का उद्देश्य वायु प्रदूषण नियंत्रण है। व्यावसायिक वाहन चालक पहले से स्लॉट और वैकल्पिक मार्गों की योजना बना लें ताकि जाम और चालान से बचा जा सके।

परिवहन विशेष सम्पादकीय आलेख - लाखों वाहन परिवारों की दिवाली के नाम - परिवहन विशेष समाचार सेवा

परिवहन विशेष सम्पादकीय आलेख - लाखों वाहन परिवारों की दिवाली के नाम - परिवहन विशेष समाचार सेवा

AQI में सुधार के बावजूद पर्यटक बसों पर प्रतिबंध का प्रस्ताव – दिल्ली टैक्सी एसोसिएशन ने CM रेखा गुप्ता और CAQM से लगाई गुहार

रिपोर्ट- अध्यक्ष, दिल्ली टैक्सी एंड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन (रजि.)

प्रस्तुतकर्ता विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र

लीड: दिल्ली में पिछले दिनों हुई बारिश ने जहाँ जहरीली हवा से राहत दी है और AQI में भारी सुधार दर्ज किया गया है, वहीं परिवहन जगत पर एक बार फिर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। 1 नवंबर 2026 से BS-IV डीजल टूरिस्ट टैक्सियों और BS-VI से नीचे के वाहनों पर प्रस्तावित प्रतिबंध से लाखों परिवारों की दिवाली काली होने की कगार पर है।

मुख्य बिंदु:

1. बारिश बनी वरदान: लगातार बारिश के बाद दिल्ली का AQI 300+ से घटकर 150-180 के स्तर पर आ गया है। वैज्ञानिक तथ्य है कि बारिश से PM2.5 और PM10 धुल जाते हैं। ऐसे में केवल कैलेंडर के आधार पर प्रतिबंध लगाना अवैज्ञानिक है - अध्यक्ष, दिल्ली टैक्सी एंड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन।

2. रोजी-रोटी पर संकट: दिल्ली-NCR में लगभग 1.5 लाख टूरिस्ट टैक्सी, 35 हजार पर्यटक बसें, RTV और मैक्सी कैब BS-IV श्रेणी में हैं। प्रत्येक वाहन पर 3-4 परिवार निर्भर हैं - यानी सीधे 6-7 लाख परिवारों की आजीविका। अचानक संचालन बंद होने से बैंक EMI, इंश्योरेंस, परमिट फीस, ड्राइवरों का वेतन - सब डूब जाएगा।

3. संस्था की स्पष्ट मांग:

- BS-IV डीजल टूरिस्ट टैक्सियों और बसों को दिल्ली में चलने की अनुमति जारी रखी जाए।
- BS-IV से नीचे के वाहनों पर प्रस्तावित GRAP-IV प्रतिबंधों की वैज्ञानिक समीक्षा हो।
- CAQM के चेयरमैन को भी राहत पत्र भेजा गया है।
- मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता जी से प्रतिनिधिमंडल को तत्काल मिलने का समय दिया जाए।

4. संपादकीय टिप्पणी: हम प्रदूषण नियंत्रण के खिलाफ नहीं, लेकिन पर्यावरण और रोजगार में संतुलन जरूरी है। GRAP का उद्देश्य प्रदूषण कम करना है, न कि गरीब ट्रांसपोर्टर को बेरोजगार करना। जब बारिश से ही हवा साफ हो गई है, तो सरकार को मानवीय दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। टूरिस्ट सीजन, छठ, दिवाली के समय में पर्यटक वाहनों को रोकना दिल्ली की पर्यटन अर्थव्यवस्था को भी तोड़ देगा।

अपील: सरकार लाखों चालकों की दिवाली को काली न बनाए। BS-IV वाहनों को PUC, फिटनेस के आधार पर चलने दें और प्रतिबंध का फैसला AQI की वास्तविक स्थिति देखकर ही लें।

चंडीगढ़ राजभवन में परिवहन मांगों पर सार्थक वार्ता - राज्यपाल ने दिया सकारात्मक आश्वासन

भारतीय परिवहन मजदूर महासंघ के 7 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने राज्यपाल श्री गुलाब चंद कटारिया से भेंट की

रिपोर्ट विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र

विस्तृत विवरण: भारतीय परिवहन मजदूर महासंघ के अखिल भारतीय महामंत्री श्री राजू भालेराव के नेतृत्व में 7 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने आज चंडीगढ़ के राज्यपाल महामहिम श्री गुलाब चंद कटारिया जी से भेंट कर चंडीगढ़ परिवहन की लंबित मांगों पर वार्ता की।

वार्ता के प्रमुख बिंदु:

- रोडवेज में नई बसों की खरीद
- चालकों के लिए प्रमोशन चैनल लागू करना
- पूर्व में लैप्स हुई 20 करोड़ राशि से नए वाहनों की खरीद
- एक वर्ष पूर्व सेवा पृथक किए गए 20 परिचालकों की सेवा बहाली
- रिक्त पदों पर नई भर्ती

राज्यपाल महोदय ने शीघ्र सकारात्मक कार्रवाई का आश्वासन दिया। साथ ही चंडीगढ़ परिवहन में भारतीय मजदूर संघ को यूनियन मान्यता चुनाव में विजय पर बधाई एवं शुभकामनाएं दीं।

प्रतिनिधिमंडल में उपस्थित: राजू भालेराव (महाराष्ट्र), सुभाष वर्मा (हिमाचल), सत्यनारायण शर्मा (राजस्थान), संजय पंडित (दिल्ली), जस्सा सिंह (चंडीगढ़), बलविंदर सिंह (चंडीगढ़), आजाद सिंह (चंडीगढ़)।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार : दक्षिण कोरिया में Tesla Full Self-Driving (FSD) "जेलब्रेकिंग" मामला: साइबर अपराध प्रवर्तन और जन सुरक्षा के लिए सबक

दक्षिण कोरिया की एजेंसियों ने टेस्ला की Full Self-Driving (FSD) सुविधा को अनधिकृत हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर संशोधनों के माध्यम से अवैध रूप से सक्रिय करने के आरोप में 80 टेस्ला मालिकों के विरुद्ध कार्रवाई की है। जांच के दौरान पुलिस ने 21 अवैध एक्टिवेशन डिवाइस भी जब्त किए। यह मामला दर्शाता है कि किस प्रकार साइबर तकनीकों, ओपन-सोर्स टूल्स, ऑनलाइन समुदायों और हार्डवेयर छेड़छाड़ का उपयोग निर्माता द्वारा लगाए गए सुरक्षा एवं नियामकीय प्रतिबंधों को दरकिनार करने के लिए किया जा सकता है।

इस संदर्भ में "जेलब्रेकिंग" क्यों महत्वपूर्ण है?

"जेलब्रेकिंग" का अर्थ है निर्माता द्वारा लगाए गए सॉफ्टवेयर प्रतिबंधों को हटाना या उन्हें बायपास करना। इस मामले में कथित रूप से टेस्ला मालिकों ने:

- यूरोप और चीन से आयातित अनधिकृत हार्डवेयर मॉड्यूल का उपयोग किया।
- ऑनलाइन उपलब्ध तकनीकी जानकारी के आधार पर स्वयं विकसित डिवाइस तैयार किए।
- GitHub जैसे प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध ओपन-सोर्स कोड और जानकारी का उपयोग किया।
- वाहन के रिकॉर्ड में अवैध एक्टिवेशन के निशान छिपाने के तरीके अपनाए।

कार्यप्रणाली (Modus Operandi)

जांच में पाया गया कि:

1. व्यक्तियों ने विदेशी बाजारों से FSD एक्टिवेशन डिवाइस खरीदे।
2. कुछ तकनीकी रूप से दक्ष उपयोगकर्ताओं ने सार्वजनिक रूप से उपलब्ध तकनीकी जानकारी के आधार पर स्वयं डिवाइस तैयार किए।
3. इन डिवाइसों को टेस्ला वाहनों से जोड़कर क्षेत्रीय सॉफ्टवेयर प्रतिबंधों को बायपास किया गया।
4. ऑनलाइन समुदायों में निम्नलिखित संबंधी जानकारी साझा की गई:
   - o प्रतिबंधित FSD सुविधाओं को सक्रिय करना।
   - o वाहन सॉफ्टवेयर में संशोधन करना।
   - o लॉग या रिकॉर्ड हटाकर परिवर्तन को छिपाना और जांच से बचना।

अधिकारियों ने इसे खतरनाक क्यों माना?

दक्षिण कोरियाई जांचकर्ताओं के अनुसार, FSD का अनधिकृत सक्रियण निम्नलिखित सुरक्षा जोखिम उत्पन्न कर सकता है:

- प्रणाली स्थानीय सड़क और यातायात परिस्थितियों को सही ढंग से पहचानने में विफल हो सकती है।
- वाहन चालक की अपेक्षाओं के विपरीत व्यवहार कर सकता है।
- आवश्यक सुरक्षा प्रमाणन और नियामकीय स्वीकृतियां दरकिनार हो जाती हैं।
- निर्माता द्वारा विकसित सुरक्षा नियंत्रण कमजोर पड़ जाते हैं।

साइबर अपराध एवं साइबर सुरक्षा के आयाम

यह घटना निम्नलिखित क्षेत्रों के बढ़ते अभिसरण को दर्शाती है:

1. वाहन हैकिंग (Vehicle Hacking)

आधुनिक वाहन सॉफ्टवेयर-संचालित प्रणालियां हैं। इलेक्ट्रॉनिक नियंत्रण प्रणालियों में अनधिकृत बदलाव संरक्षित डिजिटल प्रणालियों की हैकिंग के समान हो सकते हैं।

2. ओपन-सोर्स का दुरुपयोग (Open-Source Abuse)

वैध ओपन-सोर्स टूल्स और सार्वजनिक तकनीकी संसाधनों का उपयोग सुरक्षा नियंत्रणों को बायपास करने के लिए किया जा सकता है।

3. ऑनलाइन अपराधी इकोसिस्टम (Online Criminal Ecosystems)

ऑनलाइन फोरम और समुदाय निम्नलिखित को बढ़ावा दे सकते हैं:

- एक्सप्लॉइट तकनीकों का आदान-प्रदान।
- अनधिकृत टूल्स का वितरण।
- जांच से बचने हेतु एंटी-फॉरेंसिक तकनीकों का उपयोग।

4. सप्लाई चेन जोखिम (Supply Chain Risks)

विदेशी बाजारों से आयातित अनधिकृत हार्डवेयर निम्न जोखिम ला सकते हैं:

- मैलवेयर संक्रमण।
- बैकडोर एक्सेस।
- वाहन सुरक्षा कमजोरियां।

5. डिजिटल साक्ष्य चुनौतियां (Digital Evidence Challenges)

लॉग्स को मिटाने या रिकॉर्ड बनने से रोकने की तकनीकों का साझा किया जाना साइबर जांच और डिजिटल फॉरेंसिक के लिए एक उभरती हुई चुनौती है।

कानून प्रवर्तन एजेंसियों के लिए प्रमुख सीख

उभरते साइबर-फिजिकल खतरों की निगरानी

कनेक्टेड वाहन अब सॉफ्टवेयर छेड़छाड़ और फीचर अनलॉकिंग के लिए लक्ष्य बनते जा रहे हैं।

OSINT (Open Source Intelligence) का महत्व

अपराधियों की पहचान के लिए जांचकर्ताओं ने ऑनलाइन पोस्ट, समुदायों और डिजिटल संचार का उपयोग किया।

तकनीकी विशेषज्ञता की आवश्यकता

वाहन साइबर सुरक्षा जांचों के लिए निम्न क्षेत्रों में विशेषज्ञता आवश्यक है:

- एम्बेडेड सिस्टम
- ऑटोमोटिव सॉफ्टवेयर
- CAN Bus नेटवर्क
- डिजिटल फॉरेंसिक

जन-जागरूकता

उपभोक्ताओं को यह समझना चाहिए कि स्मार्ट डिवाइस, वाहन या सॉफ्टवेयर उत्पादों में सुरक्षा नियंत्रणों को बायपास करना न केवल कानून का उल्लंघन हो सकता है, बल्कि गंभीर सुरक्षा जोखिम भी पैदा कर सकता है।

✓ केवल निर्माता द्वारा स्वीकृत सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर अपडेट का ही उपयोग करें।

✓ ऑनलाइन उपलब्ध अनधिकृत एक्टिवेशन टूल्स खरीदने से बचें।

✓ अप्रमाणित वाहन संशोधन (Vehicle Modifications) इंस्टॉल न करें।

✓ सॉफ्टवेयर प्रतिबंधों को बायपास करने वाले ऑनलाइन समूहों और समुदायों से सावधान रहें।

✓ संदिग्ध सॉफ्टवेयर-संशोधन सेवाओं की जानकारी संबंधित अधिकारियों को दें।

कनेक्टेड वाहनों के युग में सुविधा के लिए की गई हैकिंग, सुरक्षा के लिए बड़ा खतरा बन सकती है। डिजिटल सुरक्षा उपायों को बायपास करना केवल नियमों का उल्लंघन नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन को भी जोखिम में डाल सकता है।"

परिवहन विशेष समाचार पत्र | द्वारका संस्करण | MCD वार्ड 118 जे ब्लॉक सागरपुर

इंद्रप्रस्थ पार्क में घटिया निर्माण - लाखों का बजट, गुणवत्ता शून्य?

3 महीने से धीमी रफ्तार, पुरानी दीवार पर लीपापोती – नागरिकों में आक्रोश

प्रस्तुतकर्ता केके छाबड़ा

मुख्य तथ्य:

- स्थान: इंद्रप्रस्थ पार्क, जे ब्लॉक सागरपुर, MCD वार्ड 118, द्वारका विधानसभा
- कार्य: चारदीवारी निर्माण, झूले व मेंटेनेंस
- निधि: दिल्ली सरकार व क्षेत्रीय विधायक द्वारा लाखों रुपये स्वीकृत
- स्थिति: 3 महीने से काम अधूरा, रास्ते में ईंटें बिखरी

मुख्य शिकायतें:

1. पुरानी चारदीवारी पर ही थोड़ी ईंट लगाकर ऊपर से चिनाई - प्रॉपर मसाला नहीं
2. घटिया गुणवत्ता की सामग्री का उपयोग
3. कार्य की गति अत्यंत धीमी, राहगीरों व बच्चों के लिए असुरक्षित
4. झूले व अन्य सुविधाओं का कार्य अभी तक शुरू भी नहीं

कार्रवाई: शिकायतकर्ता विकासदीप शर्मा, अधिवक्ता द्वारका ने माननीय मुख्यमंत्री जनसुनवाई पोर्टल पर शिकायत दर्ज की है। मांग है कि सीनियर अधिकारी मौके पर मुआयना करें, ठेकेदार को दंडित कर गुणवत्ता के साथ कार्य पूर्ण कराया जाए।

संपादकीय टिप्पणी: पार्क बच्चों के भविष्य का स्थान है, भ्रष्टाचार का नहीं। लाखों की निधि का दुरुपयोग नहीं होने देंगे।

खुशियों के दीप जलाएँ, प्रदूषण दूर भगाएँ: परंपराओं के साथ पर्यावरण संरक्षण

डॉ. विजय गर्ग

दीवाली भारत के सबसे लोकप्रिय और उल्लासपूर्ण त्योहारों में से एक है। यह पर्व अंधकार पर प्रकाश, अज्ञान पर ज्ञान और बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। इस अवसर पर घरों को दीपों, रंग-बिरंगी रोशनी, रंगोलियों और फूलों से सजाया जाता है। परिवार और मित्र एक-दूसरे को मिठाइयाँ और उपहार देकर खुशियाँ बाँटते हैं। लेकिन उत्सव की इन खुशियों के बीच हमें यह भी याद रखना चाहिए कि हमारी परंपराएँ तभी सार्थक हैं, जब वे प्रकृति और पर्यावरण के प्रति हमारी जिम्मेदारी को भी मजबूत करें।

आज दीवाली के उत्सव के साथ वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, प्लास्टिक कचरे और संसाधनों की बर्बादी जैसी समस्याएँ भी बढ़ रही हैं। ऐसे में आवश्यकता है कि हम त्योहार की मूल भावना को बनाए रखते हुए इसे पर्यावरण के अनुकूल बनाएँ।

पटाखों का धुआँ और स्वास्थ्य पर प्रभाव

दीवाली के दौरान पटाखे जलाने से वायुमंडल में धुआँ, सूक्ष्म कण और विभिन्न हानिकारक गैसें फैलती हैं। इससे वायु की गुणवत्ता खराब हो सकती है और विशेष रूप से बच्चों, बुजुर्गों तथा श्वसन संबंधी समस्याओं से पीड़ित लोगों को परेशानी हो सकती है। पटाखों की तेज आवाज से भी लोगों और पशु-पक्षियों को तनाव होता है।

हमें यह समझना होगा कि त्योहार की खुशी दूसरों के स्वास्थ्य और शांति की कीमत पर नहीं होनी चाहिए। पटाखों के स्थान पर मिट्टी के दीये, सजावटी रोशनी, पारिवारिक मिलन, सांस्कृतिक कार्यक्रम और सामूहिक उत्सव अपनाकर भी दीवाली को यादगार बनाया जा सकता है।

मिट्टी के दीये और भारतीय परंपराएँ

दीवाली का वास्तविक सौंदर्य मिट्टी के दीयों की सौम्य रोशनी में दिखाई देता है। स्थानीय कुम्हारों द्वारा बनाए गए दीये खरीदने से पारंपरिक कला को प्रोत्साहन मिलता है और छोटे कारीगरों की आजीविका को सहारा मिलता है। दीयों के साथ घरों को फूलों, पत्तियों और पुनः उपयोग की जा सकने वाली सजावटी वस्तुओं से सजाया जा सकता है।

हालाँकि, पर्यावरण संरक्षण के लिए केवल मिट्टी के दीये जलाना ही पर्याप्त नहीं है। तेल और बाती का विवेकपूर्ण उपयोग, बिजली की बचत, सजावटी वस्तुओं का पुनः उपयोग तथा कचरे का उचित निपटान भी आवश्यक है। एलईडी लाइटों का सीमित और जिम्मेदार उपयोग बिजली की खपत कम करने में मदद कर सकता है।

स्वच्छता और कचरा प्रबंधन

दीवाली से पहले घरों और आसपास के क्षेत्रों की सफाई करना हमारी पुरानी परंपरा है। लेकिन सफाई का अर्थ केवल घर को चमकाना नहीं, बल्कि आसपास की सड़कों, गलियों, पार्कों और सार्वजनिक स्थानों को भी स्वच्छ रखना है।

त्योहार के दौरान प्लास्टिक की थैलियों, थर्मोकोल की सजावट और एक बार इस्तेमाल होने वाली वस्तुओं से बचना चाहिए। उपहारों को कागज, कपड़े या पुनः उपयोग योग्य सामग्री में पैक किया जा सकता है। मिठाइयों और भोजन की बर्बादी रोकने के लिए आवश्यकता के अनुसार ही खरीदारी करनी चाहिए। बची हुई खाद्य सामग्री को सुरक्षित रूप से जरूरतमंद लोगों तक पहुँचाना भी एक अच्छी पहल हो सकती है।

दीवाली के बाद पटाखों के अवशेष, कागज, प्लास्टिक और अन्य कचरे को इधर-उधर फेंकने के बजाय उचित ढंग से एकत्र करके उसका निपटान करना चाहिए। उत्सव की स्वच्छता तभी पूरी होगी, जब उसकी जिम्मेदारी हम स्वयं उठाएँगे।

बच्चों को दें पर्यावरण संरक्षण की सीख

बच्चे वही सीखते हैं, जो वे अपने परिवार और समाज में देखते हैं। यदि माता-पिता स्वयं पर्यावरण के अनुकूल दीवाली मनाएँगे, तो बच्चों में भी प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता विकसित होगी। स्कूलों में हरित दीवाली पर निबंध, पोस्टर, भाषण और जागरूकता अभियान आयोजित किए जा सकते हैं।

बच्चों को समझाना चाहिए कि त्योहारों का उद्देश्य केवल वस्तुएँ खरीदना और आतिशबाजी करना नहीं, बल्कि प्रेम, सहयोग, दया और सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देना है। जरूरतमंद परिवारों की सहायता करना, बुजुर्गों के साथ समय बिताना और पशु-पक्षियों के प्रति संवेदनशील रहना भी दीवाली की खुशियों को बढ़ाता है।

पर्यावरण-अनुकूल दीवाली के लिए छोटे कदम

हम कुछ सरल उपाय अपनाकर इस पर्व को अधिक जिम्मेदार बना सकते हैं:

- पटाखों से परहेज करें और धुआँ तथा शोर कम करने में योगदान दें।
- मिट्टी के दीये और स्थानीय कारीगरों की वस्तुएँ खरीदें।
- बिजली की बचत करें और अनावश्यक रोशनी बंद रखें।
- प्लास्टिक तथा एक बार उपयोग होने वाली सजावटी वस्तुओं से बचें।
- भोजन की बर्बादी रोकें और जरूरतमंदों के साथ खुशियाँ बाँटें।
- दीवाली के बाद कचरे का उचित निपटान करें।
- पेड़-पौधों की देखभाल करें और पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लें।

निष्कर्ष

दीवाली केवल दीप जलाने का त्योहार नहीं, बल्कि अपने जीवन में प्रकाश, सद्भाव और सकारात्मकता लाने का अवसर है। यदि हमारी खुशियों से पर्यावरण को नुकसान पहुँचता है, तो हमें अपनी उत्सव मनाने की शैली पर पुनर्विचार करना चाहिए। सच्चा उत्सव वही है, जिसमें मनुष्य के साथ-साथ प्रकृति, पशु-पक्षियों और आने वाली पीढ़ियों के हितों का भी ध्यान रखा जाए।

आइए, इस दीवाली हम ऐसा संकल्प लें कि हमारे घर रोशनी से जगमगाएँ, हमारे संबंध प्रेम से महकें और हमारा वातावरण स्वच्छ बना रहे। मिट्टी के दीये जलाएँ, जरूरतमंदों के चेहरों पर मुस्कान लाएँ और प्रदूषण फैलाने वाली गतिविधियों से बचें।

खुशियों के दीप जलाएँ, प्रदूषण दूर भगाएँ— परंपराओं को निभाएँ और पर्यावरण भी बचाएँ। यही सच्ची, सुंदर और जिम्मेदार दीवाली है।

डॉ. विजय गर्ग
सेवानिवृत्त प्राचार्य। प्रख्यात वैज्ञानिक स्ट्रीट कौर चंद, एमएचआर मलोट,

नदियों-नालों का पानी बना जहरीला, खनन प्रदूषण ने छीना ग्रामीणों का स्वच्छ जल का अधिकार....

लौह अयस्क की धूल और खनिज अपशिष्ट से जलस्रोतों पर संकट, खनन कंपनियों की जवाबदेही और प्रदूषण नियंत्रण व्यवस्था की कार्यप्रणाली कठघरे में

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र कोइड़ा,

खनिज संपदा से समृद्ध सुंदरगढ़ जिले के कोइड़ा खनन क्षेत्र में विकास और औद्योगिक गतिविधियों की एक भयावह तस्वीर सामने आ रही है। यहां प्राकृतिक जलस्रोतों का रंग बदलना और नदियों-नालों के पानी में प्रदूषण की आशंका स्थानीय पर्यावरणीय संकट की गंभीरता को उजागर कर रही है। कभी ग्रामीणों की प्यास बुझाने और दैनिक जरूरतों का आधार रहे जलस्रोत अब अपनी स्वाभाविक पहचान खोते दिखाई दे रहे हैं।

स्थानीय परिस्थितियों और सामने आई तस्वीरों के अनुसार, क्षेत्र के कारो, सुना और समीपवर्ती जलप्रवाहों में लालिमा लिए पानी दिखाई दे रहा है। आशंका जताई जा रही है कि लौह अयस्क खनन से निकलने वाली धूल, मिट्टी, खनिज अपशिष्ट तथा उनके अनियंत्रित बहाव ने प्राकृतिक जलस्रोतों को प्रदूषित किया है। यह केवल पानी के रंग में बदलाव का मामला नहीं, बल्कि उन ग्रामीण परिवारों के जीवन और आजीविका से जुड़ा प्रश्न है, जिनकी निर्भरता इन्हीं जलस्रोतों पर है।

विडंबना यह है कि जिस खनिज संपदा से सरकारी राजस्व, औद्योगिक कारोबार और आर्थिक गतिविधियों को गति मिलती है, उसी के दोहन की कीमत स्थानीय आबादी को अपने पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों के नुकसान के रूप में चुकानी पड़ रही है। महिलाओं और बच्चों को यदि स्वच्छ पानी के लिए संघर्ष करना पड़े, तो इसे विकास की उपलब्धि नहीं कहा जा सकता।

सबसे बड़ा सवाल खनन कंपनियों की पर्यावरणीय जवाबदेही और संबंधित विभागों की निगरानी व्यवस्था पर है। प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, खान विभाग, जिला प्रशासन और स्थानीय निकाय आखिर अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन किस सीमा तक कर रहे हैं?

आवश्यक है कि प्रभावित जलस्रोतों के पानी की तत्काल वैज्ञानिक जांच कराई जाए, प्रदूषण के वास्तविक स्रोतों की पहचान हो तथा दोषी इकाइयों पर कठोर कार्रवाई की जाए।

खनिज संपदा का दोहन राज्य की अर्थव्यवस्था को समृद्ध कर सकता है, लेकिन इसकी कीमत ग्रामीणों के स्वास्थ्य, स्वच्छ पेयजल और प्राकृतिक विरासत के विनाश से नहीं चुकाई जा सकती। विकास का वास्तविक अर्थ तभी सार्थक होगा, जब खदानों के आसपास रहने वाले लोगों को भी स्वच्छ हवा और सुरक्षित पानी मिल सके।

मिठास के नाम पर जहर : त्योहारों में मिलावट का बढ़ता कारोबार

-सुनील कुमार महला।

दीपावली खुशियों, उमंग, प्रकाश और मिठास का त्योहार है। इस पर्व पर घर-परिवार में मिठाइयों का आदान-प्रदान केवल एक परंपरा नहीं, बल्कि आपसी प्रेम, आत्मीयता और सद्भाव का प्रतीक भी है। दीपावली आने से कई दिन पहले ही बाजार रंग-बिरंगी मिठाइयों से सजने लगते हैं और बाजार में दुकानों पर काजू कतली, बेसन के लड्डू, मोतीचूर, रसगुल्ले, बर्फी, पेड़े और गुलाब जामुन की बहार दिखाई देने लगती है। कभी घरों में भी दीपावली के लिए तरह-तरह के पकवान और मिठाइयां तैयार की जाती थीं, लेकिन बदलती जीवनशैली और व्यस्तता के कारण अब अधिकांश लोग बाजार से ही मिठाइयां खरीदना पसंद करते हैं। यही वह समय है, जब मिठाइयों की मांग अचानक बढ़ जाती है और कुछ मुनाफाखोर इस मांग को कमाई का अवसर बना लेते हैं।विडंबना यह है कि जिस मिठास को हम अपने परिवार और प्रियजनों के साथ बांटने के लिए खरीदते हैं, उसी में मिलावट का खतरा छिपा होता है। मिलावट तो मिलावट, तौल तक में गड़बड़ी की जातीं है और डिब्बे को भी मिठाई के साथ ही तौल दिया जाता है। शुद्ध देसी घी, असली मावे और गुणवत्तापूर्ण दूध से बनी मिठाइयों के नाम पर आज नकली घी, मिलावटी मावा, सिंथेटिक दूध और घटिया खाद्य सामग्री से तैयार मिठाइयां ऊंचे दामों पर बेची जाती हैं। कई बार ग्राहक को यह पता ही नहीं चलता कि वह जिस मिठाई को शुद्ध और स्वादिष्ट समझकर खरीद रहा है, उसमें इस्तेमाल की गई सामग्री उसकी सेहत के लिए कितनी नुकसानदेह हो सकती है। यह केवल उपभोक्ता के साथ आर्थिक धोखाधड़ी नहीं, बल्कि उसके स्वास्थ्य और विश्वास के साथ किया जाने वाला गंभीर अपराध है।

हम सभी जानते हैं कि मिलावट का यह कारोबार केवल मिठाइयों तक ही सीमित नहीं है। दूध, घी, पनीर, मावा, मसाले, तेल, दालें, सूखे मेवे और यहां तक कि रोजमर्रा में इस्तेमाल होने वाले कई खाद्य पदार्थ भी इसकी चपेट में हैं। कहीं दूध में पानी और अन्य रासायनिक पदार्थ मिलाए जाते हैं, तो कहीं पनीर और मावा तैयार करने में गैर-मानक सामग्री का इस्तेमाल होता है। मसालों में रंग और अन्य अवांछित पदार्थ मिलाकर उन्हें आकर्षक बनाया जाता है। खाद्य तेलों में मिलावट और नकली ब्रांडों के नाम पर बिक्री की शिकायतें भी सामने आती रहती हैं। त्योहारों के अवसर पर खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता को लेकर सरकारी स्तर पर भी चिंता जताई जाती है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण ने 29 सितंबर 2026 को राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को पत्र जारी कर नवरात्र और दीपावली के दौरान खाद्य पदार्थों की जांच, निगरानी और नमूने लेने की प्रक्रिया तेज करने के निर्देश दिए। इसमें दूध एवं दुग्ध उत्पादों, मिठाइयों, नमकीन, खाद्य तेल और घी को विशेष निगरानी में रखने को कहा गया लेकिन यहां सवाल यह उठता है कि जब हर साल त्योहारों से पहले ऐसे निर्देश जारी होते हैं, तब भी मिलावट का कारोबार आखिर क्यों नहीं रुकता? इस क्रम में हाल के घटनाक्रम इस समस्या की गंभीरता को उजागर करते हैं। दिल्ली में अक्टूबर 2026 के शुरुआती दिनों में खाद्य सुरक्षा विभाग की कार्रवाई के दौरान 4,100 किलोग्राम से अधिक संदिग्ध मिलावटी मावा और पनीर नष्ट किए जाने की खबर सामने आई। इतना ही नहीं, हाल ही में 29 अक्टूबर को भी दिल्ली के तीन बाजारों में छापेमारी के दौरान करीब 949 लीटर घटिया घी जब्त किया गया। वहीं, हरियाणा के मेवात क्षेत्र में भी लगभग 10 हजार किलोग्राम मिलावटी पनीर जब्त किए जाने की जानकारी सामने आई। राजस्थान की राजधानी जयपुर में भी दीपावली से पहले घटिया मावे और खाद्य तेल की आपूर्ति रोकने के लिए विशेष जांच अभियान चलाने की तैयारी की गई। अधिकारियों ने माना कि त्योहारों में मांग बढ़ने के कारण आसपास के जिलों से बड़ी मात्रा में घटिया मावा बाजार में पहुंचने का खतरा रहता है। इसी तरह उदयपुर में भी 29 अक्टूबर को लसाड़िया क्षेत्र में खाद्य सुरक्षा विभाग की कार्रवाई के दौरान 45 किलोग्राम अस्वच्छ मावा और 7 किलोग्राम घटिया मिठाइयां जब्त कर नष्ट किए जाने की खबर सामने आई। वास्तव में, ये घटनाएं बताती हैं कि मिलावट की समस्या किसी एक शहर, प्रदेश या मिठाई की दुकान तक सीमित नहीं है। यह एक संगठित और व्यापक समस्या का रूप ले चुकी है।

वास्तव में, सबसे चिंताजनक बात यह है कि मिलावटखोरों के हौसले केवल इसलिए बुलंद नहीं हैं कि बाजार में खाद्य पदार्थों की मांग अधिक है, बल्कि इसलिए भी कि उन्हें कानून का पर्याप्त भय नहीं है।यह बात ठीक है कि समय-समय पर छापेमारी होती है, कुछ नमूने भी लिए जाते हैं, कुछ दुकानों से खाद्य सामग्री जब्त होती है और खराब सामग्री नष्ट कर दी जाती है। मीडिया में कार्रवाई की खबरें सुर्खियां बनती हैं, लेकिन कुछ समय बाद सब कुछ पहले जैसा ही हो जाता है। असली जरूरत केवल त्योहारों पर दिखावटी सक्रियता की नहीं, बल्कि पूरे वर्ष निरंतर निगरानी और दोषियों के विरुद्ध ऐसी कठोर कार्रवाई की है, जिससे मिलावट का कारोबार करने वालों में कानून का वास्तविक भय पैदा हो।आज सोशल मीडिया का युग है और सोशल मीडिया के इस दौर में मिलावट के कारोबार की तस्वीरें और वीडियो भी अक्सर सामने आते रहते हैं। कहीं नकली मावा बनाने की प्रक्रिया दिखाई जाती है, तो कहीं रासायनिक पदार्थों से दूध तैयार करने और वनस्पति व अन्य वसा मिलाकर घी बनाने के वीडियो प्रसारित होते हैं। ये वीडियो लोगों को विचलित करते हैं और कुछ समय तक चर्चा का विषय भी बने रहते हैं, लेकिन केवल वीडियो वायरल होने से समस्या का समाधान नहीं हो सकता। ऐसे मामलों की गंभीरता से जांच होनी चाहिए और यदि आरोप सही पाए जाते हैं तो संबंधित लोगों के विरुद्ध तत्काल सख़्त कानूनी कार्रवाई होनी चाहिए। आखिर खाद्य सुरक्षा विभाग और प्रशासन की जिम्मेदारी केवल शिकायतों का इंतजार करना नहीं, बल्कि ऐसी गतिविधियों पर पहले से नजर रखना भी है। यहां यह बात भी बिल्कुल सही है कि देश में खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए कानूनों की कमी नहीं है। खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम, 2006 के तहत असुरक्षित खाद्य पदार्थों के उत्पादन और बिक्री पर गंभीर दंड का प्रावधान है। यदि असुरक्षित खाद्य पदार्थ के सेवन से किसी व्यक्ति को चोट पहुंचती है, गंभीर चोट लगती है अथवा मृत्यु होती है तो अपराध की गंभीरता के अनुसार कारावास और जुर्माने की सजा हो सकती है। मृत्यु के मामले में कम से कम सात वर्ष से लेकर आजीवन कारावास तक का प्रावधान है। इसके बावजूद कानून का प्रभाव तभी दिखाई देगा, जब उसकी निष्पक्षता से पालना हो और दोषियों को समय पर सजा मिले। विदेशों में खाद्य सुरक्षा और उपभोक्ता के स्वास्थ्य को लेकर कई देशों ने सख्त निगरानी व्यवस्थाएं विकसित की हैं। वहां खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता, उत्पादन प्रक्रिया, भंडारण और बिक्री तक पर निगरानी रखी जाती है। पाठकों को बताता चलूं कि वैश्विक स्तर पर, यूरोपीय संघ में खाद्य सुरक्षा और उपभोक्ता स्वास्थ्य को लेकर दुनिया के सबसे सख्त कानून और निगरानी व्यवस्थाएं हैं। गौरतलब है कि यूरोपियन फूड सेफ्टी अथॉरिटी एहतियाती सिद्धांत' पर काम करती है, जिसका अर्थ है कि किसी भी खाद्य योजक, रसायन या नए उत्पाद को तब तक बाजार में बिकने की अनुमति नहीं दी जाती, जब तक कि उसका सुरक्षित होना वैज्ञानिक रूप से 100% साबित न हो जाए। यही कारण है कि दुनिया के कई अन्य हिस्सों में धड़ल्ले से इस्तेमाल होने वाले रसायनों, कीटनाशकों, कृत्रिम रंगों और जेनेटिकली मॉडिफाइड फसलों पर यूरोप में पूरी तरह से प्रतिबंध है। यूरोपीय देशों (विशेषकर जर्मनी और फ्रांस) के अलावा जापान और ऑस्ट्रेलिया में भी खाद्य मानकों, पैकेजिंग और मिलावट को लेकर अत्यंत कठोर कानून लागू हैं। हमारे देश में भी ऐसी व्यवस्था को और प्रभावी बनाने की आवश्यकता है। खाद्य सुरक्षा अधिकारियों की पर्याप्त नियुक्ति, आधुनिक जांच प्रयोगशालाएं, मोबाइल खाद्य परीक्षण वाहन, नियमित निरीक्षण और प्रयोगशालाओं से समयबद्ध जांच रिपोर्ट मिलना जरूरी है। विशेष रूप से उन क्षेत्रों और प्रतिष्ठानों पर निगरानी रखी जानी चाहिए, जहां बड़े पैमाने पर मावा, पनीर और मिठाइयों का उत्पादन होता है। इतना ही नहीं, खाद्य पदार्थों के नमूने लेकर महीनों तक रिपोर्ट की प्रतीक्षा करने के बजाय जांच और कार्रवाई की प्रक्रिया में तेजी लानी होगी।इसके साथ ही उपभोक्ताओं को भी जागरूक होने की जरूरत है। हमें मिठाइयां खरीदते समय विश्वसनीय दुकानों को प्राथमिकता देनी चाहिए, और पैकिंग पर निर्माण एवं उपयोग की अंतिम तिथि, सामग्री और खाद्य लाइसेंस संबंधी जानकारी अवश्य देखनी चाहिए। हमें यह चाहिए कि हम खुले में रखी गई मिठाइयों, अस्वच्छ परिस्थितियों में तैयार खाद्य पदार्थों और असामान्य रंग या गंध वाली सामग्री से बचें तथा केवल चमक-दमक और आकर्षक पैकिंग को ही शुद्धता का प्रमाण न मानें। हमारा यह दायित्व बनता है कि किसी खाद्य पदार्थ में मिलावट का संदेह होने पर हम खाद्य सुरक्षा विभाग में शिकायत दर्ज कराएं। जागरूक उपभोक्ता भी मिलावट के विरुद्ध एक प्रभावी शक्ति बन सकता है।

अंत में यही कहूंगा कि दीपावली का वास्तविक आनंद तभी है, जब घर में जलने वाले दीपक के साथ जीवन में सुख, स्वास्थ्य और खुशहाली का उजाला भी हो। मिठाई में मिलावट केवल आर्थिक अपराध नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक विश्वास के साथ विश्वासघात है। सरकार, प्रशासन, खाद्य सुरक्षा विभाग, मिठाई विक्रेताओं और उपभोक्ताओं, सभी को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी। मिलावटखोरों के विरुद्ध सख्त से सख्त कार्रवाई होनी चाहिए ताकि कोई भी मिलावट का दुस्साहस न कर सके। संक्षेप में कहें तो हमें ऐसी दीपावली चाहिए, जिसमें मिठाइयों में मिठास हो, मिलावट का जहर नहीं; खुशियों की रोशनी हो, बीमारियों का अंधकार नहीं।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार।

कार्तिक मास: आस्था, भक्ति, दीपदान और आत्मशुद्धि का पावन महीना

दीपों की रोशनी से जगमगाते मंदिर, तुलसी की पूजा, पवित्र नदियों में स्नान और दान-पुण्य की परंपरा; भारतीय संस्कृति में कार्तिक मास का विशेष आध्यात्मिक और सामाजिक महत्व

परिवहन विशेष | विशेष आलेख

भारतीय सनातन संस्कृति में प्रत्येक महीने का अपना धार्मिक, आध्यात्मिक और प्राकृतिक महत्व है, लेकिन कार्तिक मास को विशेष पुण्यदायी और पवित्र महीनों में स्थान दिया गया है। आश्विन पूर्णिमा के अगले दिन से आरंभ होकर कार्तिक पूर्णिमा तक चलने वाला यह महीना भक्ति, साधना, संयम, सेवा, दान और आत्मशुद्धि का संदेश देता है। इस दौरान देशभर के मंदिरों, तीर्थस्थलों, नदियों और घरों में विशेष धार्मिक गतिविधियां देखने को मिलती हैं। सुबह की पूजा-अर्चना से लेकर संध्या के दीपदान तक वातावरण श्रद्धा और आध्यात्मिक ऊर्जा से भर जाता है।

कार्तिक मास का संबंध केवल धार्मिक अनुष्ठानों से नहीं, बल्कि भारतीय जीवनशैली, प्रकृति, सामाजिक समरसता और मानवीय मूल्यों से भी जुड़ा हुआ है। इस महीने में लोग अपने दैनिक जीवन में संयम, सात्विक भोजन, नियमित पूजा, जरूरतमंदों की सहायता और धार्मिक कार्यों को विशेष महत्व देते हैं। मान्यता है कि इस महीने में श्रद्धापूर्वक किए गए जप, तप, स्नान, दान और दीपदान का विशेष फल प्राप्त होता है।

दीपदान और प्रकाश का आध्यात्मिक संदेश

कार्तिक मास में दीपदान की परंपरा का विशेष महत्व है। घरों, मंदिरों, घाटों और पवित्र नदियों के किनारे दीप जलाए जाते हैं। दीपक केवल अंधकार को दूर करने का साधन नहीं, बल्कि ज्ञान, सकारात्मकता और सद्भावना का प्रतीक भी है। भारतीय दर्शन में दीपक का प्रकाश मनुष्य को अज्ञान से ज्ञान, निराशा से आशा और नकारात्मकता से सकारात्मकता की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता है।

कार्तिक मास में प्रतिदिन संध्या के समय तुलसी के पौधे के समीप दीप जलाने की परंपरा भी प्रचलित है। घरों में तुलसी पूजन को सुख, शांति और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। यह परंपरा हमें पौधों और प्रकृति के प्रति सम्मान का भाव भी सिखाती है।

तुलसी पूजा और प्रकृति से जुड़ाव

कार्तिक मास में तुलसी पूजा का विशेष धार्मिक महत्व है। हिंदू धर्म में तुलसी को माता का स्वरूप मानकर पूजा जाता है। घरों के आंगन में तुलसी का पौधा भारतीय पारिवारिक संस्कृति का अभिन्न हिस्सा रहा है। तुलसी के प्रति श्रद्धा के पीछे धार्मिक मान्यताओं के साथ-साथ उसके औषधीय गुणों का भी महत्व है।

आज जब पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और हरियाली में कमी जैसी समस्याएं गंभीर होती जा रही हैं, तब तुलसी पूजन जैसी परंपराएं हमें प्रकृति के संरक्षण का संदेश देती हैं। आवश्यकता है कि धार्मिक आस्था को पौधारोपण, जल संरक्षण, स्वच्छता और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी से जोड़ा जाए।

देवउठनी एकादशी: शुभ कार्यों के आरंभ का प्रतीक

कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को देवउठनी एकादशी या प्रबोधिनी एकादशी कहा जाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार इस दिन भगवान विष्णु चार महीने की योगनिद्रा से जागते हैं। इसी के साथ चातुर्मास का समापन होता है और विवाह सहित अनेक मांगलिक कार्यों की शुरुआत मानी जाती है।

इस अवसर पर भगवान विष्णु और माता तुलसी की पूजा की जाती है। तुलसी विवाह का आयोजन भी अनेक स्थानों पर श्रद्धा और उत्साह के साथ किया जाता है। यह पर्व पारिवारिक एकता, धार्मिक विश्वास और सामाजिक परंपराओं को आगे बढ़ाने का माध्यम है।

छठ पूजा: सूर्य उपासना और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता

कार्तिक मास में मनाया जाने वाला छठ पर्व भारतीय लोक आस्था का अत्यंत महत्वपूर्ण पर्व है। विशेष रूप से बिहार, झारखंड, पूर्वी उत्तर प्रदेश और देश के अन्य हिस्सों में श्रद्धालु पूरी श्रद्धा के साथ भगवान सूर्य और छठी मैया की उपासना करते हैं। इस पर्व में अस्ताचलगामी और उदीयमान सूर्य को अर्घ्य देने की परंपरा है।

छठ पूजा का सबसे बड़ा संदेश प्रकृति के प्रति कृतज्ञता और जीवन के आधारभूत तत्वों का सम्मान करना है। सूर्य ऊर्जा का प्रमुख स्रोत है और जल जीवन का आधार। इस पर्व में जलाशयों, नदियों और घाटों की स्वच्छता का विशेष महत्व है। इसलिए छठ पूजा के अवसर पर धार्मिक आयोजनों के साथ-साथ नदियों और जलस्रोतों को स्वच्छ रखने का सामूहिक संकल्प भी लिया जाना चाहिए।

कार्तिक पूर्णिमा और देव दीपावली का दिव्य स्वरूप

कार्तिक मास की पूर्णिमा का धार्मिक महत्व अत्यंत विशेष माना जाता है। इसी दिन अनेक स्थानों पर देव दीपावली मनाई जाती है। विशेष रूप से काशी के गंगा घाटों पर लाखों दीपों की रोशनी अद्भुत दृश्य प्रस्तुत करती है। मान्यता है कि इस दिन देवता पृथ्वी पर आकर दीपोत्सव मनाते हैं। कार्तिक पूर्णिमा को त्रिपुरारी पूर्णिमा भी कहा जाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार इसी दिन भगवान शिव ने त्रिपुरासुर का वध कर देवताओं को उसके आतंक से मुक्ति दिलाई थी।

इस अवसर पर गंगा स्नान, दीपदान, पूजा-पाठ और दान-पुण्य किया जाता है। देश के विभिन्न तीर्थस्थलों पर श्रद्धालुओं की बड़ी संख्या पहुंचती है। यह पर्व हमारी सांस्कृतिक विरासत, धार्मिक पर्यटन और सामाजिक सहभागिता को भी प्रोत्साहित करता है।

दान, सेवा और सामाजिक समरसता का संदेश

कार्तिक मास का एक महत्वपूर्ण पक्ष दान और सेवा है। धार्मिक परंपराओं में इस महीने जरूरतमंदों को अन्न, वस्त्र, भोजन और अन्य आवश्यक वस्तुएं दान करने का विशेष महत्व बताया गया है। वास्तविक अर्थों में दान केवल धन या वस्तु देने तक सीमित नहीं है, बल्कि किसी जरूरतमंद की सहायता करना, भूखे को भोजन कराना, बुजुर्गों का सम्मान करना और असहाय लोगों के जीवन में खुशियां लाना भी सेवा का महत्वपूर्ण स्वरूप है।

आज समाज में आर्थिक असमानता, बेरोजगारी और सामाजिक चुनौतियां मौजूद हैं। ऐसे में कार्तिक मास की सेवा और दान की परंपरा को जनकल्याण से जोड़ने की आवश्यकता है। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार किसी जरूरतमंद परिवार की सहायता करे, तो त्योहारों की खुशियां समाज के हर वर्ग तक पहुंच सकती हैं।

स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण का संकल्प भी जरूरी

कार्तिक मास में धार्मिक स्थलों, नदियों और घाटों पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं। ऐसे में सार्वजनिक स्थलों की स्वच्छता बनाए रखना प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है। पूजा सामग्री, प्लास्टिक, पॉलीथिन और अन्य कचरे को नदियों में प्रवाहित करने के बजाय निर्धारित स्थानों पर डालना चाहिए। दीपदान में भी पर्यावरण के अनुकूल सामग्री का उपयोग करना चाहिए।

आपके दिन की शुरुआत, पारुल भटनागर के साथ
विशेषज्ञ एस्ट्रो न्यूमेरो वास्तु कंसल्टेंट
Vediccodes
VASTU • NUMEROLOGY • ASTROLOGY
परिवहन विशेष News

धन और रिश्तों का दैनिक अंक ज्योतिष भविष्यफल

जानिए दिन की ऊर्जा • संभालिए धन • मज़बूत बनाइए रिश्ते

31 अक्टूबर 2026 | दिन का अंक: 6 — सामंजस्य, जिम्मेदारी, रिश्ते, देखभाल और भौतिक संतुलन

मूलांक 1

धन व करियर: दिन का अंक 6 आपकी नेतृत्व ऊर्जा को महत्वाकांक्षा के साथ जिम्मेदारी का संतुलन बनाने को कहता है। क्लाइंट, टीम और दीर्घकालिक आर्थिक निर्णय तब बेहतर होंगे जब नेतृत्व दबाव के बजाय न्यायपूर्ण हो।
रिश्ते: गर्मजोशी और प्रतिबद्धता प्रमुख रहेगी। सामंजस्य बनाने की पहल करें, लेकिन बिना पूछे सबके लिए क्या सही है यह तय न करें।
सावधानी: अहंकार में खर्च, नियंत्रित व्यवहार और केवल अपनी क्षमता साबित करने के लिए अतिरिक्त जिम्मेदारी लेने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: देखभाल के साथ नेतृत्व करें और ऐसा एक निर्णय लें जो प्रगति व स्थिरता दोनों बढ़ाए।

मूलांक 2

धन व करियर: दिन 6 आपकी संवेदनशील और सहयोगी प्रकृति के साथ अच्छा मेल खाता है। संयुक्त धन, क्लाइंट सेवा या साझेदारी धैर्य से बेहतर हो सकती है, लेकिन व्यावहारिक सीमाएं जरूरी रहेंगी।
रिश्ते: भावनात्मक निकटता को समर्थन मिलेगा। बार-बार आश्वासन का इंतजार करने या हर छोटे मूड का अर्थ निकालने के बजाय स्नेह सीधे व्यक्त करें।
सावधानी: भावनात्मक खर्च, निर्भरता और केवल शांति बनाए रखने के लिए अपनी जरूरतें त्यागने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक महत्वपूर्ण रिश्ते को पोषित करें और स्वस्थ सीमा भी बनाए रखें।

मूलांक 3

धन व करियर: दिन 6 आपकी रचनात्मक और अभिव्यक्तिपूर्ण ऊर्जा को लोगों और गुणवत्ता की ओर ले जाता है। प्रस्तुति, डिजाइन, शिक्षण या क्लाइंट से जुड़े काम में लाभ हो सकता है, यदि बजट संतुलित रहे।
रिश्ते: आपकी गर्मजोशी और आकर्षण संबंध मजबूत कर सकते हैं। महंगे इशारे के बजाय सच्ची प्रशंसा या साथ बिताया सुखद समय अधिक प्रभावी रहेगा।
सावधानी: दिखावे पर अधिक खर्च, बिखरी प्रतिबद्धताएं और केवल दूसरों को खुश करने के लिए वादे करने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: आर्थिक अनुशासन बनाए रखते हुए रचनात्मकता से मूल्य और गर्मजोशी बढ़ाएं।

मूलांक 4

धन व करियर: दिन 6 आपकी व्यावहारिक प्रकृति में जिम्मेदारी, सेवा और आर्थिक संतुलन जोड़ता है। घर या व्यवसाय के खर्च देखें और दीर्घकालिक सुरक्षा देने वाली व्यवस्था मजबूत करें।
रिश्ते: आप कर्तव्य और विश्वसनीयता से प्यार दिखाते हैं। भावनात्मक गर्मजोशी भी जोड़ें ताकि देखभाल केवल जिम्मेदारियों की सूची जैसी न लगे।
सावधानी: कठोरता, जरूरत से ज्यादा काम और परिवार या पेशे की हर जिम्मेदारी अकेले उठाने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक व्यावहारिक सुधार और एक सच्ची प्रशंसा से स्थिरता बनाएं।

मूलांक 5

धन व करियर: दिन 6 आपकी स्वतंत्र प्रकृति को प्रतिबद्धताओं का सम्मान करने को कहता है। नए संपर्क और अवसर उपयोगी हो सकते हैं, लेकिन हाँ कहने से पहले देखें कि वे आर्थिक और व्यक्तिगत जिम्मेदारियों के अनुकूल हैं या नहीं।
रिश्ते: नयापन रिश्ते में ताजगी ला सकता है, लेकिन आज भरोसेमंद रहना जरूरी है। बदलाव हो तो बताएं और वादे निभाएं।
सावधानी: अचानक खरीदारी, अधिक लिप्तता और लगातार व्यस्त रहकर जिम्मेदारी से बचने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: स्पष्ट सीमा के भीतर लचीलापन रखें और नया जोड़ने से पहले एक प्रतिबद्धता पूरी करें।

मूलांक 6

धन व करियर: आपके मूलांक 6 और दिन के अंक 6 की ऊर्जा एक-दूसरे को बहुत मजबूत करती है। सामंजस्य, जिम्मेदारी, सौंदर्य, सेवा और भौतिक आराम प्रमुख रहेंगे। क्लाइंट, पारिवारिक धन और मूल्य-आधारित निर्णय के लिए अच्छा दिन है, यदि विलासिता बजट में रहे।
रिश्ते: प्यार, देखभाल और प्रतिबद्धता बहुत मजबूत रहेगी। निकटता बनाएं, लेकिन याद रखें कि स्वस्थ प्रेम सहयोग करता है, नियंत्रण नहीं।
सावधानी: अधिकार भावना, जरूरत से ज्यादा देना, आराम के लिए खर्च और हर प्रयास के बदले प्रशंसा की अपेक्षा से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: सोच-समझकर देखभाल और एक समझदार आर्थिक निर्णय से सामंजस्य बनाएं।

मूलांक 7

धन व करियर: दिन 6 आपकी गहरी सोच में व्यावहारिक जिम्मेदारी जोड़ता है। दीर्घकालिक खर्च, क्लाइंट प्रतिबद्धता या काम-जीवन संतुलन की समीक्षा करें और विश्लेषण से टिकाऊ योजना बनाएं।
रिश्ते: आपको शांति चाहिए हो सकती है, जबकि अपने लोग निकटता चाहें। बिना बताए दूर होने के बजाय अपनी स्पेस की जरूरत नरमी से समझाएं।
सावधानी: भावनात्मक दूरी, पूर्णता की जिद और भावनाओं को व्यक्त करने के बजाय केवल विश्लेषण करने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एकांत और अपनापन संतुलित करें और एक सच्चा देखभाल भरा कदम लें।

मूलांक 8

धन व करियर: दिन 6 आपकी महत्वाकांक्षी ऊर्जा में जिम्मेदारी और सेवा जोड़ता है। व्यवसाय, प्रॉपर्टी या आर्थिक योजना में केवल लाभ नहीं, लोगों और दीर्घकालिक सुरक्षा को भी महत्व दें।
रिश्ते: तनाव बढ़ने पर आपकी सुरक्षा देने की प्रवृत्ति नियंत्रण में बदल सकती है। सहयोग दें, लेकिन सामने वाले को निर्णय और जिम्मेदारी में भाग लेने दें।
सावधानी: काम में अत्यधिक डूबना, प्रतिष्ठा के लिए खर्च और भावनाओं को धन या अधिकार से नियंत्रित करने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: अपनी शक्ति से दबाव नहीं, सुरक्षा बनाएं और एक महत्वपूर्ण रिश्ते को समय दें।

मूलांक 9

धन व करियर: दिन 6 आपकी उदार प्रकृति को जिम्मेदार सहयोग की ओर ले जाता है। परिवार या धन से जुड़े दायित्व पूरे करें और वहीं मदद दें जहां उससे स्थिरता बने, निर्भरता नहीं।
रिश्ते: करुणा और स्नेह मजबूत रहेंगे। क्षमा उपचार दे सकती है, लेकिन पुराना अस्वस्थ पैटर्न दोहर रहा हो तो स्वस्थ सीमा भी जरूरी है।
सावधानी: अपराधबोध में देना, भावनात्मक अतिप्रतिक्रिया और दूसरों की जिम्मेदारियां स्वयं उठाने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: गहराई से देखभाल करें, समझदारी से दें और करुणा व आत्मसम्मान का संतुलन बनाए रखें।

कॉल / व्हाट्सऐप: 8750075550 | वेबसाइट: www.vediccodes.in | @vediccodes
Vediccodes - Your vibrations... our solutions

अहोई अष्टमी: मां की ममता, संतान की खुशहाली और अटूट विश्वास का पर्व

संतान की लंबी उम्र और सुख-समृद्धि के लिए माताओं का निर्जला व्रत, भारतीय संस्कृति में मां के त्याग, प्रेम और समर्पण का अनुपम प्रतीक है अहोई अष्टमी

परिवहन विशेष | विशेष लेख

भारत की सांस्कृतिक परंपराओं में त्योहार केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि रिश्तों की आत्मीयता, पारिवारिक एकता और जीवन मूल्यों को सहेजने का माध्यम भी हैं। इन्हीं परंपराओं में अहोई अष्टमी का विशेष स्थान है। यह पर्व मां के निस्वार्थ प्रेम, ममता, त्याग और संतान के प्रति उसकी अटूट चिंता का प्रतीक है। कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को मनाया जाने वाला यह पर्व माताओं के लिए विशेष महत्व रखता है। इस दिन माताएं अपनी संतान की लंबी आयु, अच्छे स्वास्थ्य, सुख-समृद्धि और उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए व्रत रखती हैं और अहोई माता की पूजा-अर्चना करती हैं।

अहोई अष्टमी का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व भारतीय परिवार व्यवस्था की उस भावना को उजागर करता है, जिसमें संतान को परिवार का भविष्य और जीवन की सबसे अनमोल धरोहर माना गया है। मान्यता है कि इस दिन श्रद्धापूर्वक व्रत रखने और अहोई माता की कथा सुनने से संतान पर माता का आशीर्वाद बना रहता है। परंपरागत रूप से माताएं सूर्योदय से लेकर तारों के दर्शन अथवा कुछ क्षेत्रों में चंद्र दर्शन तक व्रत रखती हैं। शाम के समय घरों में अहोई माता की पूजा की जाती है। दीवार पर अहोई माता और उनके साथ सेई (साही) तथा बच्चों के चित्र बनाकर पूजा करने की परंपरा भी प्रचलित है।

त्याग और ममता की जीवंत अभिव्यक्ति

अहोई अष्टमी का पर्व मां और संतान के बीच भावनात्मक संबंधों की गहराई को समझने का अवसर देता है। मां का जीवन अपनी संतान की खुशियों, सुरक्षा और बेहतर भविष्य के लिए समर्पित रहता है। बच्चे के जन्म से लेकर उसके बड़े होने तक मां हर पल उसकी चिंता करती है। उसकी छोटी-सी परेशानी भी मां के मन को व्याकुल कर देती है और उसकी मुस्कान मां के लिए सबसे बड़ी खुशी बन जाती है। अहोई अष्टमी इसी भावनात्मक संसार का धार्मिक और सांस्कृतिक उत्सव है।

इस पर्व से जुड़ी प्रचलित कथा में एक साहूकार की पत्नी का उल्लेख मिलता है, जो मिट्टी खोदते समय अनजाने में साही के बच्चों को नुकसान पहुंचा देती है। इसके बाद उसे संतान संबंधी कष्ट का सामना करना पड़ता है। वह अहोई माता की आराधना करती है और अपनी भूल के लिए प्रायश्चित करती है। मान्यता के अनुसार माता की कृपा से उसके कष्ट दूर होते हैं। यह कथा केवल धार्मिक आस्था ही नहीं, बल्कि जीव-जंतुओं के प्रति संवेदनशीलता, करुणा और प्रकृति के सम्मान का संदेश भी देती है।

बदलते समय में भी कायम है परंपरा

आज का समाज तेजी से बदल रहा है। संयुक्त परिवारों की जगह एकल परिवार ले रहे हैं। महिलाएं घर और कार्यस्थल दोनों की जिम्मेदारियां निभा रही हैं। शिक्षा, रोजगार और आधुनिक जीवनशैली ने पारिवारिक जीवन के स्वरूप में कई बदलाव किए हैं, लेकिन मां की ममता और संतान के प्रति उसका प्रेम आज भी उतना ही अटूट है। आधुनिकता के इस दौर में भी अहोई अष्टमी जैसे पर्व भारतीय संस्कृति और पारिवारिक परंपराओं को जीवित रखने का काम कर रहे हैं।

यह पर्व हमें यह भी सोचने के लिए प्रेरित करता है कि संतान का उज्ज्वल भविष्य केवल धार्मिक कामनाओं से नहीं, बल्कि अच्छे संस्कार, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सुरक्षित वातावरण, उचित पोषण और बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं से भी सुनिश्चित होता है। माता-पिता की जिम्मेदारी केवल बच्चों की लंबी उम्र की कामना करने तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि उन्हें ऐसा वातावरण देना भी आवश्यक है, जहां बच्चे शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से स्वस्थ रह सकें।

बच्चों की सुरक्षा और स्वस्थ भविष्य का संकल्प

आज बच्चों के सामने बदलते सामाजिक परिवेश में अनेक चुनौतियां हैं। सड़क दुर्घटनाएं, प्रदूषण, असंतुलित खानपान, मोबाइल और डिजिटल दुनिया का बढ़ता प्रभाव तथा मानसिक तनाव उनके स्वास्थ्य और विकास को प्रभावित कर रहे हैं। ऐसे में अहोई अष्टमी का अवसर केवल व्रत और पूजा तक सीमित न रहकर बच्चों की सुरक्षा और बेहतर भविष्य के संकल्प से भी जुड़ना चाहिए।

विशेष रूप से सड़क सुरक्षा के प्रति अभिभावकों की जागरूकता अत्यंत आवश्यक है। बच्चों को वाहन चलाने की अनुमति निर्धारित कानूनी उम्र से पहले न देना, दोपहिया वाहन पर हेलमेट का प्रयोग, कार में सीट बेल्ट और बच्चों के लिए उपयुक्त सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करना प्रत्येक अभिभावक का दायित्व है। इसके साथ ही स्वच्छ वातावरण, पौष्टिक भोजन, नियमित स्वास्थ्य जांच और बच्चों के साथ संवाद उनके सर्वांगीण विकास के लिए जरूरी हैं।

आस्था के साथ स्वास्थ्य का ध्यान भी जरूरी

अहोई अष्टमी पर अनेक माताएं निर्जला व्रत रखती हैं। श्रद्धा और विश्वास के साथ व्रत करना व्यक्तिगत धार्मिक आस्था का विषय है, लेकिन स्वास्थ्य का ध्यान रखना भी उतना ही आवश्यक है। विशेषकर गर्भवती महिलाओं, स्तनपान कराने वाली माताओं, मधुमेह या अन्य स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रही महिलाओं को निर्जला उपवास रखने से पहले चिकित्सकीय सलाह लेनी चाहिए। धार्मिक परंपराओं का उद्देश्य जीवन में मंगल और कल्याण की भावना को मजबूत करना है, इसलिए स्वास्थ्य और सुरक्षा की अनदेखी नहीं होनी चाहिए।

मां का आशीर्वाद ही संतान की सबसे बड़ी पूंजी

अहोई अष्टमी हमें भारतीय संस्कृति के उस मूल भाव से जोड़ती है, जहां मां को सृजन, संस्कार, त्याग और करुणा का प्रतीक माना गया है। मां की प्रार्थना में केवल अपनी संतान की लंबी उम्र की कामना नहीं होती, बल्कि उसके अच्छे चरित्र, सफलता, खुशियों और सुरक्षित जीवन का सपना भी छिपा होता है।

आज आवश्यकता है कि हम इस पर्व को केवल परंपरागत अनुष्ठान के रूप में न देखें, बल्कि इसे मातृत्व के सम्मान, बेटियों और बेटों के समान अधिकार, बाल सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य और संस्कारों के संकल्प से जोड़ें। संतान का भविष्य सुरक्षित और उज्ज्वल बनाना केवल मां की नहीं, बल्कि पूरे परिवार और समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है।

अंततः अहोई अष्टमी का संदेश यही है कि मां की ममता का कोई विकल्प नहीं होता। उसकी प्रार्थनाओं में संतान के लिए पूरा संसार समाया होता है। आइए, इस पावन अवसर पर हम माताओं के त्याग और समर्पण को नमन करें तथा हर बच्चे को सुरक्षित, स्वस्थ, शिक्षित और संस्कारवान भविष्य देने का संकल्प लें। यही अहोई माता की सच्ची आराधना और इस पर्व की सार्थकता होगी।

कार्तिक मास

पावन कार्तिक मास सखी री देख आया,
'आनंद' उत्सव खूब हर्षोल्लास मनाया ।

वेद पुराणों ने कार्तिक की महिमा गाई,
कार्तिक बारह महिनों में से अति फलदाई,
जप-तप-हवन-मनन सत्संग और संकीर्तन,
गोधन की सेवा दीपदान भगवत वंदन,
सच्ची उपासना से भक्तों ने सुख पाया,
'आनंद' उत्सव खूब हर्षोल्लास मनाया ।

तड़के श्रद्धालु नित करें गंगा स्नान ध्यान,
संकल्पित पूजन का है ये सारा विधान,
सींचें हरी-भरी तुलसी जी की नित क्यारी,
और पंथवारी माता की पूजा न्यारी,
प्रबोधिनी एकादशी विष्णु को जगाया,
'आनंद' उत्सव खूब हर्षोल्लास मनाया ।

करवा चौथ अहोई अष्टमी छठ का व्रत,
धन त्रयोदशी दीपावली की सुखद रंगत,
गोवर्धन पूजा भाई दूज की रौनक,
देव दीपावली की जगमग सी चमक-दमक,
सुख समृद्धि सौभाग्य आरोग्यता को पाया,
'आनंद' उत्सव खूब हर्षोल्लास मनाया ।

- मोनिका डागा "आनंद", चेन्नई
आपके स्नेह और प्यार का धन्यवाद
रचना स्वरचित और सर्वाधिकार सुरक्षित

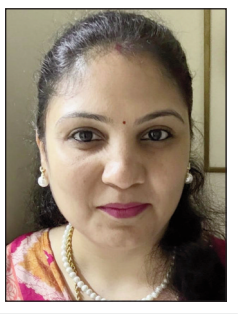

सीएम विंडो व जनसंवाद पोर्टल पर प्राप्त शिकायतों का समयबद्ध निपटान जरूरी : डीसी

डीसी वर्षा खांगवाल ने अधिकारियों की बैठक में की सीएम विंडो, जनसंवाद , एसएमजीटी पोर्टल पर प्राप्त शिकायतों की समीक्षा

झज्जर, 30 अक्टूबर। प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के जनसेवा एवं सुशासन के निर्देशों की अनुपालना में जिला प्रशासन झज्जर द्वारा जनसमस्याओं के त्वरित समाधान और सरकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन पर विशेष जोर दिया जा रहा है। प्रशासन का प्रयास है कि पात्र नागरिकों को योजनाओं का लाभ समय पर मिले और किसी भी नागरिक को अपनी समस्या के समाधान के लिए अनावश्यक रूप से सरकारी कार्यालयों के चक्कर न लगाने पड़ें। यह बात डीसी वर्षा खांगवाल ने शुक्रवार को अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ सुमिता मिश्रा के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के उपरांत अधिकारियों की समीक्षा बैठक के दौरान कही।

डीसी ने लघु सचिवालय सभागार में विभागीय अधिकारियों के साथ बैठक करते हुए सीएम विंडो, एसएमजीटी समाधान शिविर व जनसंवाद पोर्टल पर प्राप्त शिकायतों के निस्तारण की विभागवार समीक्षा की। उन्होंने संबंधित अधिकारियों से लंबित मामलों की स्थिति की जानकारी लेते हुए निर्देश दिए कि मुख्यमंत्री के स्पष्ट निर्देशों के अनुरूप आमजन की समस्याओं का समाधान सर्वोच्च प्राथमिकता के आधार पर किया जाए।

नागरिकों की समस्याओं का हो त्वरित और गुणवत्तापूर्ण समाधान

डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि समाधान शिविर में आने वाले प्रत्येक नागरिक की समस्या को गंभीरता से सुना जाए और शिकायत के समाधान के लिए संबंधित विभाग द्वारा प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि शिविरों में प्राप्त शिकायतों का निपटारा निर्धारित समय सीमा में किया जाए तथा जहां संभव हो, मौके पर ही समाधान सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि प्रशासनिक व्यवस्था का उद्देश्य नागरिकों को सरल, सुगम और पारदर्शी सेवाएं उपलब्ध करवाना है। किसी भी शिकायत का केवल औपचारिक निस्तारण न किया जाए, बल्कि शिकायतकर्ता की समस्या का वास्तविक एवं गुणवत्तापूर्ण समाधान सुनिश्चित किया जाए।

एसएमजीटी, जनसंवाद पोर्टल व सीएम विंडो की शिकायतों पर रखें विशेष निगरानी

डीसी वर्षा खांगवाल ने एसएमजीटी, जनसंवाद पोर्टल और सीएम विंडो पर प्राप्त शिकायतों की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को निर्देश दिए कि संबंधित अधिकारी पोर्टल पर नियमित रूप से निगरानी रखें और शिकायतों पर समयबद्ध कार्रवाई करें। उन्होंने कहा कि अनावश्यक रूप से लंबित शिकायतों को गंभीरता से लिया जाएगा। शिकायतों के समाधान में लापरवाही या अनावश्यक देरी पाए जाने पर संबंधित अधिकारी की जिम्मेदारी तय की जाएगी। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि शिकायतों के निस्तारण की रिपोर्ट समय पर पोर्टल पर अपडेट की जाए और प्रत्येक मामले में कार्रवाई की गुणवत्ता का भी ध्यान रखा जाए। उन्होंने आमजन से भी सरकार द्वारा उपलब्ध करवाए गए जनसंवाद पोर्टल और सीएम विंडो जैसे माध्यमों का अधिक से अधिक उपयोग करने का आह्वान किया।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर एसडीएम झज्जर रवि मीणा, डीआरओ मनवीर सिंह, डीडीपीओ निशा तंवर, पीडब्ल्यूडी के एक्सईएन सुमित कुमार सहित अन्य विभागीय अधिकारी मौजूद रहे।

हरियाणा की 60 वर्षों की गौरवशाली विकास यात्रा का साक्षी बनेगा झज्जर

परिवहन विशेष न्यूज

एक नवंबर को झज्जर में मनाई जाएगी हीरक जयंती
राजकीय नेहरू पीजी महाविद्यालय के ऑडिटोरियम में होगा जिला स्तरीय समारोह
डीसी वर्षा खांगवाल ने बैठक लेकर अधिकारियों को सौंपी जिम्मेदारियां, सुबह 9 बजे शुरू होगा जिला स्तरीय समारोह
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में आयोजित राज्य स्तरीय समारोह से भी लाइव जुड़ेंगे झज्जरवासी

झज्जर, 30 अक्टूबर

हरियाणा प्रदेश के गठन के 60 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में रविवार, एक नवंबर को मनाई जाने वाली हीरक जयंती को लेकर झज्जर जिला में विशेष तैयारियां की जा रही हैं। रविवार को राजकीय नेहरू पीजी महाविद्यालय, झज्जर के ऑडिटोरियम में जिला स्तरीय समारोह का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम में प्रदेश की छह दशक की विकास यात्रा, उपलब्धियों और गौरवशाली इतिहास को उत्सव के रूप में प्रस्तुत किया जाएगा। कुरुक्षेत्र में आयोजित राज्यस्तरीय समारोह में मुख्यातिथि राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मुर्मू के सन्देश व समारोह का लाइव प्रसारण होगा जिसमें झज्जर के लोगों का जुड़ाव रहेगा।

जिला स्तरीय समारोह की तैयारियों को लेकर डीसी वर्षा खांगवाल ने संबंधित अधिकारियों के साथ बैठक की और कार्यक्रम के सफल एवं व्यवस्थित आयोजन के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि हरियाणा की स्थापना के 60 वर्ष पूरे होना प्रदेश के लिए गौरव और उत्सव का अवसर है। हीरक जयंती केवल एक समारोह नहीं, बल्कि प्रदेश की विकास यात्रा, सांस्कृतिक विरासत, सामाजिक एकता और जनभागीदारी को याद करने का महत्वपूर्ण अवसर है।

डीसी ने कहा कि हीरक जयंती समारोह का उद्देश्य प्रदेश की इस गौरवशाली विकास यात्रा को याद करने के साथ-साथ नई पीढ़ी को हरियाणा के इतिहास, संस्कृति, परंपराओं और उपलब्धियों से परिचित करवाना है। यह अवसर प्रदेशवासियों में आपसी भाईचारे, सामाजिक समरसता और हरियाणवी संस्कृति के प्रति गौरव की भावना को और मजबूत करेगा। उन्होंने संबंधित विभागों के अधिकारियों को निर्देश दिए कि कार्यक्रम स्थल पर साफ-सफाई, बैठने की व्यवस्था, पेयजल, बिजली, साउंड सिस्टम, सुरक्षा और अन्य जरूरी प्रबंध सुनिश्चित किए जाएं।

डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि हरियाणा की 60 वर्षों की यह यात्रा प्रदेशवासियों के परिश्रम, संकल्प और सामूहिक प्रयासों की कहानी है। हीरक जयंती समारोह के माध्यम से प्रदेश की उपलब्धियों को जन-जन तक पहुंचाने के साथ विकसित हरियाणा के संकल्प को भी नई ऊर्जा मिलेगी।

डीसी ने जिला प्रशासन की ओर से नागरिकों से अपील की है कि वे इस गौरवपूर्ण अवसर पर आयोजित जिला स्तरीय समारोह में भागीदारी करते हुए हरियाणा की विकास यात्रा के इस ऐतिहासिक उत्सव के साक्षी बनें।

राष्ट्रीय एकता दिवस आज: एकजुट भारत के लिए आज दौड़ेंगे जिलावासी

31 अक्टूबर को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाई जाएगी लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की 151 वीं जयंती
जिला मुख्यालय के साथ साथ उपमंडल स्तर पर बादली,बेरी और बहादुरगढ़ में मनाई जाएगी सरदार वल्लभभाई पटेल जयंती
झज्जर में खाद्य ,नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले राज्य मंत्री राजेश नागर व चेयरमैन कप्तान बिरधाना, बहादुरगढ़ में विधायक राजेश जून व पूर्व विधायक नरेश कौशिक, बादली में पूर्व मंत्री ओमप्रकाश धनखड़, बेरी में संजय कबलाना रन फ़ॉर यूनिटी को दिखाएंगे हरी झंडी
डीसी वर्षा खांगवाल ने कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर अधिकारियों के साथ की समीक्षा बैठक

झज्जर,30 अक्टूबर

राष्ट्रीय एकता के मुख्य वास्तुकार एवं लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की 151 वीं जयंती को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। इस अवसर पर जिला मुख्यालय के साथ साथ बहादुरगढ़, बेरी और बादली में उपमंडल स्तर पर रन फॉर यूनिटी व शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन होगा।

शुक्रवार को डीसी वर्षा खांगवाल ने अधिकारियों के साथ कार्यक्रम की तैयारियों की समीक्षा करते हुए आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

डीसी ने बताया कि शनिवार सुबह 6:30 बजे महर्षि दयानंद सरस्वती स्टेडियम से रन फॉर यूनिटी को हरियाणा के खाद्य ,नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले राज्य मंत्री राजेश नागर द्वारा जिला परिषद चेयरमैन कप्तान सिंह बिरधाना की मौजूदगी में एकता की शपथ दिलाने के साथ ही हरी झंडी दिखाते हुए रवाना किया जाएगा। वहीं बादली में पूर्व मंत्री ओमप्रकाश धनखड़, बहादुरगढ़ में विधायक राजेश जून व पूर्व विधायक नरेश कौशिक, बेरी में संजय कबलाना रन फॉर यूनिटी को झंडी दिखाकर रवाना करेंगे।

डीसी ने बताया कि एकता दिवस पर यह दौड़ झज्जर शहर के मुख्य मार्गों से होती हुई वापिस स्टेडियम में संपन्न होगी।

राष्ट्रीय एकता का संदेश देने के लिए दौड़ेंगे जिलावासी

डीसी ने कहा कि राष्ट्रीय एकता का संदेश देने के लिए जिलावासी रन फ़ॉर यूनिटी में भागीदार बनेंगे। उन्होंने कहा कि सरदार पटेल के आदर्शों को स्मरण करते हुए इस आयोजन का उद्देश्य समाज में एकता, अखंडता और देशभक्ति की भावना को प्रोत्साहित करना है। उन्होंने नागरिकों से आह्वान किया कि वे बड़ी संख्या में इस आयोजन में भाग लेकर सरदार पटेल के सिद्धांतों को अपने जीवन में आत्मसात करें और स्वस्थ जीवनशैली की ओर कदम बढ़ाएं

यह अधिकारी रहे मौजूद

इस अवसर पर एडीसी जगनिवास, एसडीएम झज्जर रवि मीणा, सीटीएम ऋतु लघु सचिवालय सभागार में व एसडीएम बेरी रेणूका नांदल, एसडीएम बादली विशाल कुमार बैठक में वर्चुअल माध्यम से जुड़े।

मुख्यमंत्री नायब सैनी का किसान हितैषी निर्णय, गन्ने का भाव 450 प्रति क्विंटल तक बढ़ा: कमल हंदूजा बरवाला

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा) । हरियाणा सरकार द्वारा गन्ने के भाव में बढ़ोतरी की घोषणा को गन्ना किसानों के लिए महत्वपूर्ण राहत बताते हुए कमल हंदूजा बरवाला, जिला सह मीडिया प्रभारी भाजपा हांसी एवं हल्का बरवाला मीडिया प्रभारी भाजपा, ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में प्रदेश सरकार किसानों की आय और कृषि क्षेत्र को मजबूत करने की दिशा में कार्य कर रही है।

घोषित दरों के अनुसार, गन्ना सीजन 2026-27 में किसानों को 430 रुपये प्रति क्विंटल तथा सीजन 2027-28 में 450 रुपये प्रति क्विंटल भाव मिलेगा। इस निर्णय से गन्ना उत्पादक किसानों को बेहतर मूल्य मिलने की उम्मीद है और खेती की लागत के बीच उन्हें आर्थिक संबल मिलेगा।

कमल हंदूजा बरवाला ने कहा कि हरियाणा कृषि प्रधान प्रदेश है और यहां किसानों के हितों को प्राथमिकता देने की आवश्यकता को सरकार ने अपनी नीतियों में स्थान दिया है। उन्होंने कहा कि फसलों के उचित मूल्य, सरकारी खरीद व्यवस्था और किसानों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करना कृषि क्षेत्र को सशक्त बनाने के लिए जरूरी है। उन्होंने हरियाणा में 24 फसलों पर न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) देने की व्यवस्था का उल्लेख करते हुए कहा कि प्रदेश सरकार की ओर से किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य दिलाने के प्रयास किए जा रहे हैं। किसान की मेहनत का सम्मान हो और उसकी फसल को बाजार में उचित भाव मिले, यही कृषि व्यवस्था का महत्वपूर्ण उद्देश्य होना चाहिए।

कमल हंदूजा ने कहा कि गन्ने के भाव में प्रस्तावित बढ़ोतरी से किसानों को आगामी सीजन में लाभ मिलने की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि किसान देश की अर्थव्यवस्था और खाद्य सुरक्षा की मजबूत नींव हैं। किसानों के हित में लिए जाने वाले निर्णय ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती देने के साथ-साथ कृषि क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव लाने में भी सहायक होते हैं।

एसआईआर-2026 : वोटर के दावे व आपत्तियों की तिथि बढ़कर हुई 20 नवंबर : डीसी

30 नवंबर को प्रकाशित होगी अंतिम मतदाता सूची
डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी वर्षा खांगवाल ने अधिकारियों को दिए निर्देश

झज्जर, 30 अक्टूबर

भारत निर्वाचन आयोग के दिशा निर्देशों अनुरूप चल रही विशेष गहन पुनरीक्षण प्रक्रिया के तहत मतदाता सूची को त्रुटिरहित, पारदर्शी और विश्वसनीय बनाने के लिए जिला प्रशासन सक्रियता से कार्य कर रहा है। डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी वर्षा खांगवाल ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि एसआईआर के तहत जारी सभी नोटिस पर सुनवाई की तिथि बढ़कर अब 20 नवम्बर हो गई है। ऐसे में यह कार्य शुक्रवार 20 नवंबर 2026 तक पूरा किया जाए। उन्होंने कहा कि यह सुनिश्चित करना प्रशासन की प्राथमिकता है कि कोई भी पात्र नागरिक मतदाता सूची में नाम दर्ज करवाने से वंचित न रहे।

डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि मतदाता सूची का शुद्धिकरण लोकतांत्रिक व्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसलिए सभी संबंधित अधिकारी पूरी गंभीरता, पारदर्शिता और जिम्मेदारी के साथ कार्य करें। पुनरीक्षण से संबंधित प्रत्येक गतिविधि निर्धारित समय सीमा के भीतर पूरी की जाए, ताकि मतदाताओं को किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े।

नोटिस की सुनवाई में बरती जाए पारदर्शिता

डीसी ने बताया कि एसआईआर प्रक्रिया के तहत जारी नोटिस पर सुनवाई का कार्य जारी है। अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि शेष नोटिस की सुनवाई 20 नवंबर तक अनिवार्य रूप से पूरी की जाए। संबंधित मतदाताओं तक नोटिस पहुंचाने, उन्हें सुनवाई का अवसर देने और प्रत्येक मामले का नियमानुसार निपटान करने में किसी प्रकार की लापरवाही नहीं होनी चाहिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि सभी मामलों का निस्तारण निर्धारित नियमों और प्रक्रिया के अनुसार किया जाए।

फॉर्म-6, 7 और 8 के आवेदनों का भी हो समय पर निपटारा

डीसी ने अधिकारियों को एसआईआर के दौरान प्राप्त फॉर्म-6, फॉर्म-7 और फॉर्म-8 के आवेदनों का भी नियमानुसार शीघ्र निस्तारण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि मतदाता सूची में नाम शामिल करवाने के लिए फॉर्म-6, नाम हटाने से संबंधित दावों के लिए फॉर्म-7 तथा मतदाता सूची में दर्ज विवरण में संशोधन सहित अन्य निर्धारित सेवाओं के लिए फॉर्म-8 का उपयोग किया जाता है। इन आवेदनों पर निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार कार्रवाई करते हुए समयबद्ध निपटान सुनिश्चित किया जाए।

साझा की जा रही दावे-आपत्तियों की सूची

डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि मतदाता सूची पुनरीक्षण की प्रक्रिया में पारदर्शिता बनाए रखने के लिए राजनीतिक दलों की भागीदारी भी महत्वपूर्ण है। इसी उद्देश्य से जिला के चारों निर्वाचक पंजीयन अधिकारियों और जिला निर्वाचन अधिकारी के स्तर पर नियमित बैठकें आयोजित की जा रही हैं। दावों और आपत्तियों से संबंधित सूचियां प्रत्येक सप्ताह राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ साझा की जा रही हैं, ताकि प्रक्रिया में पारदर्शिता बनी रहे और सभी संबंधित पक्षों को आवश्यक जानकारी उपलब्ध हो सके। उन्होंने बताया कि दावों और आपत्तियों की सुपर-चेकिंग का कार्य भी पूरा किया जा चुका है।

जिलाभर में 807 मतदान केंद्रों पर तैनात हैं बीएलओ

डीसी वर्षा खांगवाल ने बताया कि 31 जुलाई 2026 तक जारी प्रारूप मतदाता सूची में कुल 6 लाख 68 हजार 832 मतदाता दर्ज हैं। जिले के सभी 807 मतदान केंद्रों पर बूथ लेवल अधिकारियों (बीएलओ) की तैनाती की गई है। इनके कार्यों की निगरानी के लिए सुपरवाइजर भी नियुक्त किए गए हैं। प्रशासन की ओर से पुनरीक्षण कार्य की लगातार निगरानी की जा रही है, ताकि अभियान के दौरान सामने आने वाली समस्याओं का समय रहते समाधान किया जा सके।

आगामी 30 नवंबर को प्रकाशित होगी अंतिम मतदाता सूची

डीसी वर्षा खांगवाल ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग और मुख्य निर्वाचन अधिकारी, हरियाणा के निर्देशानुसार अंतिम मतदाता सूची का प्रकाशन 30 नवंबर 2026 को किया जाएगा। उन्होंने सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि निर्धारित समय सीमा को ध्यान में रखते हुए शेष कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर पूरा करें। साथ ही, मतदाता सूची से संबंधित प्रत्येक कार्रवाई में नियमों का पालन सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि एसआईआर-2026 का उद्देश्य मतदाता सूची को अपडेट और विश्वसनीय बनाना है। इसके लिए सभी अधिकारी आपसी समन्वय के साथ कार्य करें और यह सुनिश्चित करें कि कोई भी पात्र मतदाता अपने मताधिकार से वंचित न रहे।

पुराने दस्तावेजों को सहेजना हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी : डीसी

डीसी वर्षा खांगवाल ने अभिलेख दान अभियान के तहत ऐतिहासिक दस्तावेज, पुराने पत्र, तस्वीरें व महत्वपूर्ण रिकॉर्ड दान करने के लिए नागरिकों से किया आह्वान

-निजी अभिलेख अपने पास रखने वालों को भी संरक्षण के लिए नि:शुल्क मार्गदर्शन देगा अभिलेखागार विभाग

झज्जर, 30 अक्टूबर।

इतिहास केवल किताबों में ही नहीं, बल्कि पुराने दस्तावेजों, पत्रों, तस्वीरों और ऐतिहासिक अभिलेखों में भी जीवंत रहता है। हमारी विरासत से जुड़े ये दस्तावेज आने वाली पीढ़ियों के लिए अनमोल धरोहर हैं। इन्हें सुरक्षित रखना और भावी पीढ़ियों तक पहुंचाना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। यह आह्वान डीसी वर्षा खांगवाल ने झज्जर जिला वासियों से हरियाणा राज्य अभिलेखागार विभाग के 'अभिलेख दान अभियान' में बढ़-चढ़कर भागीदारी करने की अपील करते हुए किया।

डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि अनेक परिवारों और संस्थाओं के पास पीढ़ियों से पुराने ऐतिहासिक दस्तावेज, महत्वपूर्ण पत्र, दुर्लभ तस्वीरें, सरकारी रिकॉर्ड तथा सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक घटनाओं से जुड़े अभिलेख सुरक्षित रखे हुए हैं। ये अभिलेख न केवल बीते समय की घटनाओं के प्रमाण हैं, बल्कि तत्कालीन प्रशासनिक व्यवस्था, सामाजिक जीवन, आर्थिक गतिविधियों, धार्मिक परंपराओं और सांस्कृतिक विरासत की भी महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं। ऐसे दस्तावेजों का उचित संरक्षण आने वाली पीढ़ियों को अपने इतिहास से जोड़ने का महत्वपूर्ण माध्यम बन सकता है।

ऐतिहासिक धरोहर को सुरक्षित रखने के लिए आगे आएं नागरिक

डीसी वर्षा खांगवाल ने बताया कि अभिलेखागार विभाग, हरियाणा का मुख्य उद्देश्य प्रशासनिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व के सरकारी और निजी अभिलेखों को एकत्रित करना, उनका व्यवस्थित प्रबंधन करना तथा वैज्ञानिक तरीके से संरक्षण करना है। इसी उद्देश्य से विभाग द्वारा अभिलेख दान अभियान चलाया जा रहा है। उन्होंने नागरिकों से अपील की कि यदि उनके पास कोई ऐतिहासिक महत्व का दस्तावेज, पुराना पत्र, तस्वीर, डायरी, सरकारी रिकॉर्ड या अन्य दुर्लभ सामग्री उपलब्ध है, तो उसे हरियाणा राज्य अभिलेखागार को दान करने पर विचार करें, ताकि इस बहुमूल्य विरासत को उचित देखभाल के साथ सुरक्षित रखा जा सके।

अपने पास अभिलेख रखने वालों को भी मिलेगी नि:शुल्क सहायता

डीसी ने स्पष्ट किया कि जो व्यक्ति अपने पास मौजूद ऐतिहासिक दस्तावेजों को दान नहीं करना चाहते और उन्हें अपने पास ही सुरक्षित रखना चाहते हैं, वे भी अभिलेखागार विभाग को इसकी जानकारी दे सकते हैं। विभाग द्वारा ऐसे अभिलेखों के बेहतर रखरखाव एवं संरक्षण के लिए समय-समय पर नि:शुल्क मार्गदर्शन और आवश्यक सहायता उपलब्ध करवाई जाएगी।

वेबसाइट और हेल्पलाइन से प्राप्त करें जानकारी

डीसी ने बताया कि अभिलेख दान अभियान के संबंध में अधिक जानकारी के लिए नागरिक हरियाणा राज्य अभिलेखागार विभाग की वेबसाइट www.haryanaarchives.gov.in पर जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त ई-मेल archives@hry.nic.in और दूरभाष नंबर 0172-2992112 पर संपर्क किया जा सकता है। इसके अलावा उप-निदेशक, अभिलेखागार विभाग, हरियाणा, सिंचाई भवन, चौथी मंजिल, बी-ब्लॉक, सेक्टर-5, पंचकूला (दूरभाष 0172-2992112) तथा सहायक निदेशक, क्षेत्रीय अभिलेखागार, हिसार मंडल, कमरा नंबर 245-46, द्वितीय तल, लघु सचिवालय, हिसार (दूरभाष 01662-283190) से भी सहायता प्राप्त की जा सकती है।

रूबियो की यात्रा : नीति निर्माण का जिम्मा अब बड़े व्यापारियों को

(आलेख : सवेरा, अनुवाद : संजय पराते)

पिछले सप्ताह, कुछ अजीबोगरीब घटनाएँ घटीं हैं, जो इस गंभीर और खतरनाक दिशा का संकेत देती हैं कि भारत किधर जा रहा है। अमेरिका के विदेश मंत्री मार्को रुबियो मुंबई में उतरे, ताबड़तोड़ बैठकें कीं और जामनगर के लिए रवाना हो गए, "रिलायंस के लोगों से मिलने", जैसा कि भारत में अमेरिकी राजदूत सर्जियो गोर ने बताया। रुबियो ने नई दिल्ली की यात्रा को पूरी तरह छोड़ दिया और इस दौरे को 'व्यापार-केंद्रित' बताया। मुंबई में, रुबियो ने अपने भारतीय समकक्ष, एस. जयशंकर के साथ एक औपचारिक बैठक की, जहाँ उन्होंने कथित तौर पर ₹व्यापार, रक्षा, प्रौद्योगिकी और ऊर्जा सुरक्षा₹ पर चर्चा की। दूसरे शब्दों में, यह एक औपचारिकता थी, जिसका कोई विशेष महत्व नहीं था। रुबियो ने गौतम अडानी और टाटा समूह के अध्यक्ष एन. चंद्रशेखरन से भी मुलाकात की।

उनकी इसी यात्रा के दौरान, भारतीय पेट्रोलियम मंत्री हरदीप पुरी की एक फ़ोटो सोशल मीडिया पर वायरल हो गई, जिसमें वे बच्चों के बलात्कारी, यौन तस्कर और सत्ता के दलाल सजाप्राप्त दिवंगत जेफ़री एप्स्टीन के साथ बातचीत कर रहे थे। यह तस्वीर नई नहीं है – इसे जनवरी 2026 में अमेरिका के न्याय विभाग (डिपार्टमेंट ऑफ़ जस्टिस) ने 'एप्स्टीन फ़ाइल्स' के हिस्से के तौर पर जारी किया था। इसमें दोनों को एक कमरे जैसी जगह पर बैठे हुए दिखाया गया था, जहाँ कोई और मौजूद नहीं था – यह पुरी की इस साल की शुरुआत में दी गई उस श्रमसाध्य सफाई के ठीक उलट था, जिसमें उन्होंने कहा था कि वह सिर्फ़ एक प्रतिनिधिमंडल के साथ एप्स्टीन से मिले थे। अजीब बात यह थी कि यह फिर से बड़े पैमाने पर सामने आया, ठीक उसी समय जब रुबियो, जामनगर में मौजूद दुनिया के सबसे बड़े तेल शोधन संयंत्र के मालिक अंबानी से मिलने गए थे, और बताया जा रहा था कि वे अमेरिका को डीज़ल की आपूर्ति करने और जामनगर में वेनेज़ुएला के कच्चे तेल के शोधन पर बात करने जा रहे हैं। ये ऐसे विषय हैं, जिन पर पेट्रोलियम मंत्री को आम तौर पर ध्यान देना चाहिए। लेकिन हाल ही में पुरी गायब से लग रहे हैं। साफ़ है कि कोई उस शर्मनाक बैठक की तस्वीर को दोबारा साझा करके भारतीय सरकार को ब्लैकमेल करने की कोशिश कर रहा था।

इन घटनाओं और उनकी पृष्ठभूमियों के वास्तविक अर्थ को समझने से पहले, यह गौर करने की आवश्यकता है कि ऐसा प्रतीत होता है कि मोदी अपने ही देश में हाशिए पर जा रहे हैं, क्योंकि वैश्विक कुलीन वर्ग और अमेरिकी अधिकारी सीधे-सीधे स्थानीय बड़े व्यापारिक घरानों से संपर्क साध रहे हैं। वास्तव में, रुबियो ने यह घोषणा की कि अमेरिका-भारत मुक्त व्यापार समझौता लगभग अंतिम रूप ले चुका है – जो कि भारतीय सरकार के लिए चिंता का विषय है – किंतु विदेश मंत्रालय ने केवल 'प्रगति' का उल्लेख किया। या तो मोदी को परवाह नहीं है, या फिर अधिक संभावना यह है कि सत्ता के इन दलालों को परवाह नहीं है। स्थिति चाहे जो भी हो, यह एक खतरनाक रुख है, जो देश की नीति-निर्माण प्रक्रिया और हितों को कॉर्पोरेट एकाधिकारवादियों को सौंप रहा है। यह इस तथ्य से स्पष्ट है कि सत्ता के शीर्ष स्तरों से इन तमाम गतिविधियों पर कोई टिप्पणी नहीं हुई है। तकनीकी-दिग्गज अरबपति मस्क का एक्स पर किया गया व्यंग्यात्मक पोस्ट, जिसमें उन्होंने मुकेश अंबानी को प्रधानमंत्री संबोधित किया और उन्हें "भारत का असली बॉस" बताया, उसमें कुछ हद तक सच्चाई है।

रुबियो की यात्रा के दौरान वास्तव में क्या हो रहा था? आइए, इसका पता लगाने का प्रयास करते हैं।

भारत-अमेरिका व्यापार समझौता

हमारे पाठकों को याद होगा कि भारत-अमेरिका द्विपक्षीय व्यापार समझौता जाहिर तौर पर रुका हुआ है, हालांकि बीच-बीच में बातचीत में प्रगति के दावे किए जाते हैं। एक साक्षात्कार में, रुबियो ने कहा कि दोनों देश एक समझौते के ₹बेहद करीब₹ थे, और यह भी जोड़ा कि, ₹...मुझे लगता है कि हम इसे अंतिम रूप देने से महीनों नहीं, बल्कि कुछ हफ़्ते ही दूर हैं। मुझे लगता है कि 99 प्रतिशत काम पूरा हो चुका है₹ इसकी प्रगति को लेकर मैं बेहद सकारात्मक अनुभव कर रहा हूँ।" इससे पहले जून में, सर्जियो गोर ने लगभग यही बात कहते हुए समझाया था कि भारत चाहता है कि अमेरिका को होने वाले उसके निर्यातों पर लगने वाले शुल्क प्रतियोगियों की तुलना में कम किए जाएं। इसी साल फरवरी में, दोनों पक्षों ने काफी जश्न के बीच एक रूपरेखा समझौते की घोषणा की थी। इसका उद्देश्य आगे की चर्चाओं और समझौते को अंतिम रूप देने की नींव रखना था। भारत की ओर से महत्वपूर्ण रियायतें दी गईं, जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका से पांच वर्षों में 50 करोड़ डॉलर मूल्य के सामान का आयात करने की प्रतिबद्धता शामिल है, इसके अलावा "सभी अमेरिकी औद्योगिक वस्तुओं और अमेरिकी खाद्य एवं कृषि उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला पर शुल्क को समाप्त या कम करने" की दिशा में कदम उठाना भी शामिल है। इस आत्मसमर्पण का ब्योरा लोकलहर के पुराने अंकों में दिया जा चुका है। वार्ता के मुद्दों के अलावा, मोदी सरकार को इस सौदे को लेकर किसानों, ट्रेड यूनियनों और वामपंथी दलों के भारी और आक्रामक विरोध का सामना करना पड़ा है, क्योंकि इससे कृषि के साथ-साथ उद्योगों, खासकर एमएसएमई क्षेत्र में भारी तबाही मचेगी।

रुबियो भारत के बड़े उद्यमों को एकजुट कर इस गतिरोध को खत्म करने का प्रयास कर रहे थे, ताकि वे इस समझौते को अंतिम रूप देने में हाथ बँटा सकें। यही कारण है कि समझौते के मार्ग की बाधाओं को तवज्जो नहीं दी गई और अमेरिका में निवेश के अवसरों के आश्वासन दिए गए। उन्हें पता है कि देश

में मोदी की कमज़ोर हालत और उनकी सरकार का बड़े उद्यमों के आगे पूरी तरह झुक जाना, अमेरिका के लिए फ़ायदेमंद सौदा पाने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। ध्यान दें कि उन्होंने इस मौके का फ़ायदा "अमेरिकी तकनीक और प्रणाली" के आयात पर ज़ोर देने के लिए उठाया, जो अपेक्षाकृत हथियारों के लिए एक आसान शब्द है। रुबियो ज़्यादा से ज़्यादा मछलियाँ पकड़ने के लिए दूर-दूर तक जाल फैला रहे थे।

अपनी ओर से, इन दिग्गजों को किसानों और मजदूरों की बिल्कुल परवाह नहीं थी। वे उन तीन कृषि कानूनों के समर्थन में खड़े थे, जो कृषि का कॉर्पोरेटीकरण कर देते, लेकिन किसानों के बहादुरीपूर्ण प्रतिरोध के आगे मोदी सरकार को झुकना पड़ा। ये दिग्गज श्रम सुधारों के भी पैरोकार रहे हैं, जिन्होंने उन चार संहिताओं का स्वागत किया है, जो मजदूरों को गुलाम जैसी स्थिति में ला देते हैं। इसलिए, इस बात की बहुत संभावना है कि अंबानी और अन्य लोग सरकार के सामने अमेरिका का पक्ष रखने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

तेल सौदे

तेल और उसके उत्पादों के संबंध में रूबियो की जामनगर यात्रा के कई उद्देश्य थे। एक तात्कालिक और अति-आवश्यक उद्देश्य अंबानी को अमेरिका के लिए डीजल का निर्यात बढ़ाने के लिए राजी करना था, जहां पिछले एक वर्ष में खुदरा डीजल की कीमतों में 77 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई है। यह जीवन-यापन की लागत को बढ़ाने वाला एक प्रमुख कारक है, जो अमेरिकी कांग्रेस के आगामी मध्यावधि चुनावों में एकमात्र सबसे बड़ा मुद्दा है। जनमत सर्वेक्षणों के अनुसार ट्रंप के नेतृत्व वाले रिपब्लिकन काफी पीछे चल रहे हैं, और रॉयटर्स/इप्सोस के सर्वेक्षण में ट्रंप की लोकप्रियता की दर मात्र 31 प्रतिशत बताई गई है। इसलिए, बाजारों में डीजल की आपूर्ति बढ़ाने से असंतोष कुछ हद तक शांत हो सकता है।

रिलायंस का जामनगर शोधन संयंत्र दुनिया में डीजल के सबसे बड़े उत्पादकों में से एक है। मीडिया खबरों के अनुसार, इसने वर्ष 2025 की पहली छमाही में 2.166 करोड़ टन परिष्कृत पेट्रोलियम उत्पादों का निर्यात किया है। इसमें से 98.1 लाख टन के साथ डीजल की हिस्सेदारी सबसे अधिक रही, उसके बाद 61.4 लाख टन पेट्रोल और 20.6 लाख टन जेट ईंधन का स्थान रहा है। फ़िनिश थिंक टैंक सीआरइए द्वारा उद्धृत आंकड़ों के अनुसार, रिलायंस ने सितंबर 2026 में अमेरिका को 14.3 करोड़ डॉलर के तेल उत्पाद निर्यात किए हैं। रिलायंस के तेल उत्पादों के अमेरिकी निर्यात को सुगम बनाने के लिए, ट्रंप ने हाल ही में रूसी कच्चे तेल का उपयोग करने वाले उन आपूर्तिकर्ताओं पर लगे 100 प्रतिशत शुल्क में ढील दी है, जिसे पिछले ही महीने अमेरिकी कांग्रेस द्वारा कानून का रूप दिया गया था। वर्ष 2025 तक रिलायंस के आयात में रूसी कच्चे तेल की हिस्सेदारी लगभग 50 प्रतिशत तक पहुंच गई थी, किंतु अमेरिका के कड़े प्रतिबंधों के पश्चात इसमें गिरावट दर्ज की गई। वास्तव में, ट्रम्प ने अब डीजल के आयात की अनुमति प्रदान करने हेतु स्वयं रूस के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। यह सब आसन्न मध्यावधि चुनावों के कारण है।

किन्तु तेल की यह कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। अंबानी और अडानी जैसे दिग्गजों के नेतृत्व वाले समूह विदेशों में मुनाफे की तलाश कर रहे हैं, जबकि वे भारत में और निवेश करने से इंकार कर रहे हैं, क्योंकि यहाँ मुनाफा बहुत कम है। इसलिए, रुबियो ने टेक्सास की एक तेल शोधन संयंत्र में रिलायंस द्वारा 300 अरब डॉलर तक के निवेश और उसके उत्पादों की खरीद व्यवस्था से जुड़े पिछले सौदे की भी पुष्टि की थी। यह भी ध्यान रखें कि अडानी पर लगे रिश्वत के आरोप खारिज होने के बाद उन्होंने हाल ही में अमेरिका में 10 अरब डॉलर के निवेश का वादा किया था।

एप्स्टीन विवाद

बहरहाल, ऐसे समय में जब हरदीप पुरी रुबियो-अंबानी बातचीत में शामिल हो सकते थे, पुरी-एप्स्टीन तस्वीरों का फिर से मीडिया मे आना, पुरी (और भारत सरकार) की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाकर फायदा उठाने की कोशिशों की ओर इशारा करता है। लेकिन इससे ज़्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि मोदी सरकार ने एक ऐसे मंत्री को इतने महीनों से अपने पद पर कैसे और क्यों बने रहने दिया है, जो साफ़ तौर पर एक यौन अपराधी के साथ शामिल था। हाल ही में भाजपा द्वारा घोषित राज्यसभा उम्मीदवारों की सूची में उनका नाम शामिल नहीं है। इसलिए, संभवतः उन्हें पदमुक्त कर दिया जाएगा। लेकिन अमेरिका-इज़राइल द्वारा फरवरी में ईरान पर आक्रमण के बाद जब पूरी दुनिया तेल संकट से जूझ रही थी, ऐसे संवेदनशील दौर में भी उन्हें पद पर बने रहने की अनुमति देना न केवल एक अनुचित कृत्य था, बल्कि इसने ठीक उसी तरह की ब्लैकमेलिंग का खतरा पैदा कर दिया, जिसका प्रयास आज किया जा रहा है। आखिरकार, दस देशों में कम से कम सोलह सार्वजनिक हस्तियों को एप्स्टीन के साथ अपने संबंधों के कारण सार्वजनिक पद से इस्तीफा देना पड़ा है (या उन्हें हटाया गया है) या उन्हें आपराधिक जांच का सामना करना पड़ रहा है, जबकि सैकड़ों अन्य लोग अनिश्चितता का सामना कर रहे हैं, क्योंकि उन तीस लाख दस्तावेजों में कहीं न कहीं उनका उल्लेख है।

क्या मोदी यह सब संभाल सकते हैं?

प्रधानमंत्री मोदी दावा करते रहे हैं कि वह और उनकी पार्टी 'इंडिया फर्स्ट' को मानते हैं; कि वे सच्चे राष्ट्रवादी हैं; कि वे 'विश्व गुरु' (दुनिया के शिक्षक) हो सकते हैं; कि वे सबसे ज्यादा कुशल और सबसे ज़्यादा जन-केंद्रित हैं – संक्षेप में, सबसे अच्छे हैं।

बहरहाल, महत्वपूर्ण आर्थिक फैसले अरबपतियों को सौंपना, ट्रंप जैसे उपद्रवियों और नेतन्याहू जैसे भ्रष्ट विक्षिप्तों के आगे नतमस्तक होना, बड़े उद्यमों और वैश्विक कुलीनों के याचक बनना, ये सब इस बात के संकेत हैं कि – दुर्भाग्य से – हमारी सरकार आम जनता के हित में काम नहीं कर रही है। इसकी आर्थिक नीतियों से देश का दोबारा उपनिवेशीकरण होगा, जबकि इसकी सामाजिक सांस्कृतिक विचारधारा भारत को मध्यकालीन ज़माने के अंधेरे में धकेल रही है। मोदी आधुनिक दुनिया को नहीं संभाल सकते, और उनसे और भाजपा/आरएसएस से आज भारत को बचाने की ज़रूरत है।

(लेखक शोध अध्येता हैं। अनुवादक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान

दक्षिण राउरकेला में सरकारी जमीन पर भू-माफिया की नजर, प्रशासनिक निगरानी पर उठे गंभीर सवाल

रंगोली चौक की बेशकीमती सरकारी भूमि पर कब्जे की कोशिश; 20 डिसमिल जमीन को समतल कर बाउंड्री बनाने की तैयारी, राजस्व विभाग की कार्यप्रणाली और स्थानीय आरआई की भूमिका जांच के घेरे में

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र राउरकेला

दक्षिण राउरकेला में सरकारी जमीन पर अवैध कब्जे की कोशिश का मामला केवल भू-माफिया की दबंगई तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि इसने स्थानीय राजस्व प्रशासन की कार्यप्रणाली और निगरानी व्यवस्था पर भी गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। रंगोली चौक स्थित शिव मंदिर से सटी लगभग 20 डिसमिल बेशकीमती सरकारी जमीन को कथित तौर पर पहले समतल किया गया और फिर उस पर बाउंड्री निर्माण के जरिए कब्जा जमाने की साजिश रचे जाने का मामला सामने आया है।

हैरानी की बात यह है कि सरकारी भूमि पर इस तरह की गतिविधियां अचानक नहीं होतीं। जमीन की पहचान, सीमांकन, मिट्टी भराई और निर्माण की तैयारी जैसी गतिविधियां लंबे समय तक चलती हैं। ऐसे में स्थानीय राजस्व निरीक्षक (आरआई) और संबंधित विभागीय कर्मचारियों की निगरानी व्यवस्था आखिर किस स्तर पर सक्रिय थी, यह अपने आप में बड़ा सवाल है।

क्या प्रशासन को इसकी भनक नहीं लगी या शिकायत सामने आने तक जानबूझकर आंखें मूंदे रखी गईं? स्थानीय स्तर पर सरकारी कर्मचारियों की कथित मिलीभगत अथवा भू-माफियाओं को संरक्षण मिलने की आशंकाओं की निष्पक्ष जांच जरूरी है। हालांकि, किसी कर्मचारी की संलिप्तता अभी प्रमाणित नहीं है, लेकिन प्रशासनिक जवाबदेही तय किए बिना ऐसे मामलों पर प्रभावी रोक संभव नहीं है।

मामले की जानकारी मिलने पर तहसीलदार सलमा माझी ने राजस्व निरीक्षक गौतम ओराम को मौके पर भेजकर जांच के निर्देश दिए थे। जांच में संबंधित जमीन सरकारी होने की पुष्टि होने की बात सामने आई है। जागरण मंच के सदस्यों और स्थानीय ग्रामीणों ने भी एकजुट होकर अवैध कब्जे का विरोध किया।

अब सवाल यह है कि सरकारी जमीन पर कब्जे की कोशिश करने वालों के विरुद्ध केवल जांच और आश्वासन तक कार्रवाई सीमित रहेगी या वास्तव में अतिक्रमण हटाकर दोषियों पर कानूनी शिकंजा कसा जाएगा?

प्रशासन के लिए यह जवाबदेही की परीक्षा है। सरकारी संपत्ति की रक्षा केवल कागजी जिम्मेदारी नहीं, बल्कि राजस्व अधिकारियों का संवैधानिक और प्रशासनिक दायित्व है। इसलिए पूरे मामले की उच्चस्तरीय जांच, संबंधित राजस्व अभिलेखों की पड़ताल तथा ड्यूटी में लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों की जवाबदेही तय करना आवश्यक है।

राष्ट्रीय एकता दिवस पर एसएसबी जवानों ने निकाली 10 किलोमीटर लंबी साइकिल रैली

फिट इंडिया मूवमेंट के तहत दिया स्वस्थ जीवनशैली, पर्यावरण संरक्षण एवं प्रदूषण मुक्त वातावरण का संदेश

परिवहन विशेष न्यूज

नरकटियागंज। सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती एवं राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर शुक्रवार को 44वीं वाहिनी सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी), नरकटियागंज की ओर से फिट इंडिया मूवमेंट अभियान के तहत 10 किलोमीटर लंबी साइकिल रैली का आयोजन किया गया। वाहिनी कमांडेंट बलवंत सिंह नेगी के कुशल मार्गदर्शन में आयोजित इस रैली का शुभारंभ वाहिनी मुख्यालय से हुआ।

साइकिल रैली वाहिनी मुख्यालय से निकलकर नरकटियागंज स्थित शहीद चौक पहुंची। इसके बाद वहां से वापस वाहिनी मुख्यालय लौटकर संपन्न हुई। इस दौरान वाहिनी के बलकार्मिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए लगभग 10 किलोमीटर की दूरी तय की। रैली के माध्यम से जवानों ने आम नागरिकों को नियमित व्यायाम, साइकिलिंग और शारीरिक गतिविधियों को दैनिक जीवन

का हिस्सा बनाने के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य जवानों एवं आम नागरिकों में शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा स्वस्थ जीवनशैली अपनाने का संदेश देना था। साथ ही साइकिलिंग को प्रोत्साहित कर पर्यावरण संरक्षण और प्रदूषण मुक्त वातावरण के प्रति लोगों को जागरूक किया गया।

इस अवसर पर सरदार वल्लभभाई पटेल के राष्ट्र निर्माण, राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता के लिए दिए गए अतुलनीय योगदान को याद किया गया। उनके आदर्शों पर चलने तथा देश की एकता और अखंडता बनाए रखने का संकल्प भी लिया गया।

44वीं वाहिनी एसएसबी की इस पहल के माध्यम से संदेश दिया गया कि नियमित शारीरिक व्यायाम और स्वस्थ जीवनशैली अपनाकर प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को स्वस्थ रख सकता है। स्वस्थ नागरिक ही सशक्त समाज और मजबूत राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं ।

बालू ओवरलोडिंग के विवाद ने लिया हिंसक रूप, बालू घाट पर खूनी संघर्ष

ठेकेदार और कर्मचारियों पर जानलेवा हमला, बंदूक दिखाकर हत्या की धमकी देने का आरोप; धारदार हथियार से कर्मचारी का सिर फोड़ा, चार वाहनों में पहुंचे थे हमलावर

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र बीरमित्रपुर,

सुंदरगढ़ जिले में बालू घाटों पर वर्चस्व, अवैध गतिविधियों और बालू लोडिंग को लेकर विवाद अब हिंसक रूप लेने लगे हैं। कुआरमुंडा क्षेत्र में शंख नदी के एक बालू घाट पर ओवरलोडिंग को लेकर बुधवार देर रात ऐसा ही एक गंभीर घटनाक्रम सामने आया, जहां कथित तौर पर 15 से अधिक लोगों ने बालू घाट के ठेकेदार और वहां कार्यरत कर्मचारियों पर हमला कर दिया। इस दौरान बंदूक दिखाकर जान से मारने की धमकी देने तथा धारदार हथियार से एक कर्मचारी के सिर पर जानलेवा वार करने का आरोप लगाया गया है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, बालू घाट के ठेकेदार फणीभूषण किसान की देखरेख में घाट पर बालू लोडिंग का काम चल रहा था। इसी दौरान ओवरलोडिंग को लेकर विवाद उत्पन्न हुआ। आरोप है कि बुधवार देर रात चार वाहनों में सवार होकर 15 से अधिक लोग बालू घाट पहुंचे। वहां मौजूद कर्मचारी रखु हांसदा को निशाना बनाते हुए हमलावरों ने धारदार हथियार से उसके सिर पर हमला कर दिया। हमले में वह गंभीर रूप से घायल हो गया।

आरोप यह भी है कि हमलावरों ने बंदूक निकालकर ठेकेदार और वहां कार्यरत कर्मचारियों को भयभीत किया तथा विरोध करने पर जान से मारने की धमकी दी। घटना के दौरान दोनों पक्षों के बीच जमकर विवाद और मारपीट हुई। अचानक हुए इस हमले से बालू घाट पर अफरा-तफरी का माहौल पैदा हो गया।

घटना के बाद बालू घाट के ठेकेदार की ओर से संबंधित थाने में लिखित शिकायत दर्ज कराई गई है। पुलिस ने शिकायत के आधार पर मामले की जांच शुरू कर दी है।

बड़ा सवाल यह है कि आखिर बालू घाटों पर कानून का इकबाल कितना प्रभावी है? यदि ओवरलोडिंग अथवा ठेकेदारी संबंधी विवादों का समाधान हथियारों और बाहुबल से किया जाएगा, तो यह न केवल कानून-व्यवस्था बल्कि खनिज परिवहन व्यवस्था की पारदर्शिता पर भी गंभीर सवाल खड़े करता है। अब पुलिस की जांच और आरोपियों के विरुद्ध कार्रवाई पर सबकी निगाहें टिकी हैं।

मानव शरीर के भीतर औषधियों की खोज: सूक्ष्मजीवों के अद्भुत रहस्य

● डॉ. विजय गर्ग

उदाहरण के लिए, आंतों के कुछ बैक्टीरिया बैक्टीरियोसिन नामक रोगाणुरोधी पदार्थ उत्पन्न करते हैं, जो कुछ विशेष प्रकार के बैक्टीरिया की वृद्धि को रोक सकते हैं। अन्य सूक्ष्मजीव ब्यूटिरेट जैसे लघु-श्रृंखला वाले फैटी एसिड बनाते हैं, जो आंतों की कोशिकाओं के स्वास्थ्य और प्रतिरक्षा संबंधी कार्यों में सहायता करते हैं। यद्यपि ये सभी पदार्थ दवाएँ नहीं हैं, फिर भी वे हमारे सूक्ष्मजीवी सहयोगियों की असाधारण रासायनिक क्षमता को प्रदर्शित करते हैं।

मानव शरीर केवल अंगों, ऊतकों और कोशिकाओं का समूह नहीं है, बल्कि यह खरबों सूक्ष्मजीवों का घर भी है। ये सूक्ष्मजीव हमारी त्वचा पर तथा पाचन तंत्र, विशेषकर आंतों में रहते हैं। बैक्टीरिया, कवक और वायरस सहित ये सूक्ष्मजीव मिलकर एक जटिल समुदाय बनाते हैं, जिसे मानव माइक्रोबायोम कहा जाता है। यद्यपि कुछ सूक्ष्मजीव बीमारियाँ पैदा करते हैं, लेकिन अनेक सूक्ष्मजीव हमारे स्वास्थ्य को बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अब वैज्ञानिक एक रोमांचक संभावना की खोज कर रहे हैं कि ये छोटे जीव नई दवाओं की खोज में भी सहायक हो सकते हैं।

हमारे भीतर छिपी अदृश्य दुनिया

मानव आंतों में विभिन्न प्रकार के सूक्ष्मजीव पाए जाते हैं। इनके सामूहिक समुदाय को आंतों का माइक्रोबायोम कहा जाता है। ये जीव भोजन के कुछ घटकों को पचाने, उपयोगी पदार्थ बनाने, प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करने और हानिकारक सूक्ष्मजीवों से सुरक्षा प्रदान करने में सहायता करते हैं।

इन सूक्ष्मजीवों की सबसे रोचक विशेषताओं में से एक विभिन्न प्रकार के रासायनिक यौगिकों का उत्पादन करने की क्षमता है। कुछ पदार्थ उन्हें आपस में संवाद करने, पोषक तत्त्वों के लिए प्रतिस्पर्धा करने और दूसरे सूक्ष्मजीवों से अपनी रक्षा करने में सहायता करते हैं।

वैज्ञानिकों का मानना है कि इन पदार्थों की विविधता नई दवाओं के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण संकेत दे सकती है। आंतों के सूक्ष्मजीवों द्वारा उत्पादित कुछ रासायनिक यौगिक भविष्य में संक्रमणों और अन्य बीमारियों के उपचार के लिए नई दवाओं के विकास की प्रेरणा बन सकते हैं।

प्रकृति की सूक्ष्म रासायनिक फैक्ट्रियाँ

सूक्ष्मजीव लाखों वर्षों से जैविक रूप से सक्रिय पदार्थों का उत्पादन करते आ रहे हैं। प्रकृति में ये पदार्थ सूक्ष्मजीवों को जीवित रहने, प्रतिस्पर्धा करने और बदलते पर्यावरण के अनुकूल बनने में सहायता करते हैं।

एंटीबायोटिक दवाओं की खोज इस सूक्ष्म रासायनिक संसार के महत्त्व को दर्शाती है। अलेक्जेंडर फ्लेमिंग ने 1928 में पेनिसिलिन की खोज की थी। यह दवा बैक्टीरिया से नहीं, बल्कि एक प्रकार के कवक से प्राप्त हुई थी। अनेक अन्य एंटीबायोटिक दवाएँ भी मिट्टी और प्राकृतिक वातावरण में पाए जाने वाले सूक्ष्मजीवों से प्राप्त की गई हैं।

मानव माइक्रोबायोम पर होने वाला अनुसंधान अब इस खोज को हमारे शरीर में रहने वाले सूक्ष्मजीवों तक विस्तारित कर रहा है। वैज्ञानिक यह पता लगाने का प्रयास कर रहे हैं कि क्या आंतों के बैक्टीरिया ऐसे नए पदार्थ उत्पन्न करते हैं, जो हानिकारक रोगाणुओं को रोक सकें या मानव शरीर की जैविक प्रक्रियाओं को प्रभावित कर सकें।

उदाहरण के लिए, आंतों के कुछ बैक्टीरिया बैक्टीरियोसिन नामक रोगाणुरोधी पदार्थ उत्पन्न करते हैं, जो कुछ विशेष प्रकार के बैक्टीरिया की वृद्धि को रोक सकते हैं। अन्य सूक्ष्मजीव ब्यूटिरेट जैसे लघु-श्रृंखला वाले फैटी एसिड बनाते हैं, जो आंतों की कोशिकाओं के स्वास्थ्य और प्रतिरक्षा संबंधी कार्यों में सहायता करते हैं। यद्यपि ये सभी पदार्थ दवाएँ नहीं हैं, फिर भी वे हमारे सूक्ष्मजीवी सहयोगियों की असाधारण रासायनिक क्षमता को प्रदर्शित करते हैं।

नई एंटीबायोटिक दवाओं की खोज

रोगाणुरोधी दवाओं के प्रति प्रतिरोध आधुनिक चिकित्सा के सामने उपस्थित सबसे गंभीर चुनौतियों में से एक है। कुछ रोग पैदा करने वाले बैक्टीरिया ने मौजूदा एंटीबायोटिक दवाओं के प्रति प्रतिरोध विकसित कर लिया है। इसके कारण कई संक्रमणों का उपचार कठिन होता जा रहा है।

इसलिए शोधकर्ता मानव माइक्रोबायोम सहित विभिन्न स्रोतों से नए रोगाणुरोधी यौगिकों की खोज कर रहे हैं। आंतों के कुछ बैक्टीरिया स्वाभाविक रूप से ऐसे पदार्थ उत्पन्न करते हैं, जो दूसरे सूक्ष्मजीवों की वृद्धि को दबा सकते हैं। इन पदार्थों की कार्यप्रणाली को समझकर

संक्रमणों की रोकथाम और उपचार के नए तरीके विकसित किए जा सकते हैं।

हालाँकि, किसी उपयोगी यौगिक की खोज केवल पहला कदम है। वैज्ञानिकों को उसकी रासायनिक संरचना की पहचान करनी होती है, उसके कार्य करने के तरीके को समझना होता है तथा उसकी प्रभावशीलता और संभावित विषाक्तता का मूल्यांकन करना होता है। किसी संभावित दवा को स्वीकृत औषधि बनाने से पहले विस्तृत प्रयोगशाला परीक्षण और नैदानिक परीक्षण आवश्यक होते हैं।

सूक्ष्मजीव और व्यक्तिगत चिकित्सा

प्रत्येक व्यक्ति के आंतों के माइक्रोबायोम की संरचना अलग हो सकती है। खानपान, आयु, पर्यावरण, दवाएँ और जीवनशैली इसकी संरचना को प्रभावित कर सकते हैं।

ये अंतर यह समझने में सहायता कर सकते हैं कि अलग-अलग व्यक्ति एक ही दवा के प्रति अलग-अलग प्रतिक्रिया क्यों देते हैं। शोधकर्ता अध्ययन कर रहे हैं कि आंतों के सूक्ष्मजीव कुछ दवाओं के विघटन, सक्रियता और प्रभाव को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। सूक्ष्मजीवों के एंजाइम कुछ दवाओं को सक्रिय कर सकते हैं, उनकी सक्रियता कम कर सकते हैं या उनके प्रभाव में परिवर्तन ला सकते हैं।

भविष्य में किसी व्यक्ति के माइक्रोबायोम का विश्लेषण डॉक्टरों को अधिक सूचित उपचार संबंधी निर्णय लेने में सहायता कर सकता है। वैज्ञानिक लाभकारी बैक्टीरिया के चयन और कुछ विशेष बीमारियों के उपचार के लिए मल-माइक्रोबायोटा प्रत्यारोपण जैसी माइक्रोबायोम-आधारित चिकित्सा पद्धतियों का भी अध्ययन कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, बार-बार होने वाले Clostridioides difficile संक्रमण के कुछ मामलों में इस पद्धति का उपयोग किया जाता है।

फिर भी, माइक्रोबायोम अनुसंधान अभी विकास के चरण में है। अधिकांश बीमारियों के लिए नियमित माइक्रोबायोम परीक्षण के आधार पर व्यक्तिगत उपचार अभी स्थापित चिकित्सा पद्धति नहीं बना है।

खोज से दवा तक का सफर

किसी सूक्ष्मजीव द्वारा उत्पादित रासायनिक यौगिक को उपयोगी दवा में बदलने के लिए एक व्यवस्थित वैज्ञानिक प्रक्रिया की आवश्यकता होती है।

सबसे पहले, शोधकर्ता आधुनिक प्रयोगशाला तकनीकों और आनुवंशिक विश्लेषण की सहायता से सूक्ष्मजीवों का अध्ययन करते हैं। इसके बाद संभावित रूप से उपयोगी यौगिकों की पहचान करके उनकी जैविक सक्रियता की जाँच की जाती है। आशाजनक यौगिकों की सुरक्षा, खुराक, प्रभावशीलता और संभावित दुष्प्रभावों का मूल्यांकन किया जाता है।

जीनोम सीक्वेंसिंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और उन्नत रासायनिक विश्लेषण जैसी आधुनिक तकनीकें सूक्ष्मजीवों से प्राप्त यौगिकों की पहचान को अधिक प्रभावी बना रही हैं। आनुवंशिक जानकारी से यह पता लगाने में सहायता मिल सकती है कि कौन-से सूक्ष्मजीव ऐसे पदार्थ उत्पन्न करने में सक्षम हैं, जिनकी अभी तक खोज नहीं हुई है।

फिर भी कई चुनौतियाँ बनी हुई हैं। कुछ सूक्ष्मजीवों को प्रयोगशाला में विकसित करना कठिन होता है। कुछ यौगिक केवल विशेष परिस्थितियों में ही उत्पन्न होते हैं। इसके अतिरिक्त, प्रयोगशाला में प्रभावी दिखाई देने वाला कोई पदार्थ आवश्यक नहीं कि मनुष्यों के लिए भी प्रभावी और सुरक्षित हो।

अपने सूक्ष्मजीवी सहयोगियों की रक्षा

मानव माइक्रोबायोम में औषधियों की खोज की संभावना हमें अपने सूक्ष्मजीवों के साथ स्वस्थ संतुलन बनाए रखने के महत्त्व का भी एहसास कराती है। आहार में पर्याप्त रेशेदार पदार्थ, संतुलित भोजन, अच्छी नींद, नियमित शारीरिक गतिविधि और उचित चिकित्सा देखभाल सामान्य स्वास्थ्य तथा आंतों के माइक्रोबायोम के सामान्य कामकाज में सहायता कर सकते हैं।

एंटीबायोटिक दवाओं का उपयोग जिम्मेदारी से और केवल चिकित्सकीय आवश्यकता होने पर ही करना चाहिए। इनका अनावश्यक उपयोग सूक्ष्मजीव समुदायों के संतुलन को बिगाड़ सकता है और दवाओं के प्रति प्रतिरोध बढ़ा सकता है।

लोगों को अप्रमाणित सूक्ष्मजीवी उत्पादों से बीमारियों का उपचार करने का प्रयास नहीं करना चाहिए और न ही चिकित्सकीय सलाह के बिना एंटीबायोटिक दवाएँ लेनी चाहिए। लाभकारी बैक्टीरिया की उपस्थिति का अर्थ यह नहीं है कि प्रत्येक सूक्ष्मजीव या माइक्रोबायोम पूरक उत्पाद सुरक्षित है।

निष्कर्ष

मानव शरीर में सूक्ष्मजीवों की एक अद्भुत दुनिया मौजूद है, जिसकी रासायनिक क्षमता को वैज्ञानिक अभी समझना शुरू ही कर रहे हैं। आंतों के सूक्ष्मजीव केवल पाचन में सहायता नहीं करते, बल्कि जैविक रूप से सक्रिय पदार्थ उत्पन्न करते हैं, हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली के साथ परस्पर क्रिया करते हैं और कुछ दवाओं के प्रति शरीर की प्रतिक्रिया को भी प्रभावित करते हैं।

जैसे-जैसे सूक्ष्मजीव विज्ञान, जैव-प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता में प्रगति होगी, ये छोटे जीव नए रोगाणुरोधी पदार्थों की खोज और नवीन उपचारों के विकास में सहायता कर सकते हैं। हालाँकि, किसी भी संभावित खोज को रोगियों में सुरक्षित उपयोग से पहले कठोर वैज्ञानिक परीक्षणों से गुजरना आवश्यक है।

भविष्य की चिकित्सा में नई दवाओं की खोज केवल जंगलों, समुद्रों और प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि हमारे शरीर में रहने वाले सूक्ष्मजीवों की असाधारण रासायनिक दुनिया को समझना भी इसका महत्त्वपूर्ण हिस्सा होगा।

कभी-कभी मानव शरीर के सबसे छोटे निवासी ही चिकित्सा विज्ञान में सबसे बड़ी खोजों के द्वार खोल सकते हैं।

सेवानिवृत्त प्राचार्य। शिक्षाविद् एवं प्रख्यात वैज्ञानिक
स्ट्रीट कौर चंद, एम.एच.आर.
मलोट, पंजाब – 152107

बदलती विवाह परंपराएँ और टूटती गाँवों की सामाजिक एकता: मैरिज पैलेसों ने छीन ली गाँवों की रौनक

डॉ. विजय गर्ग

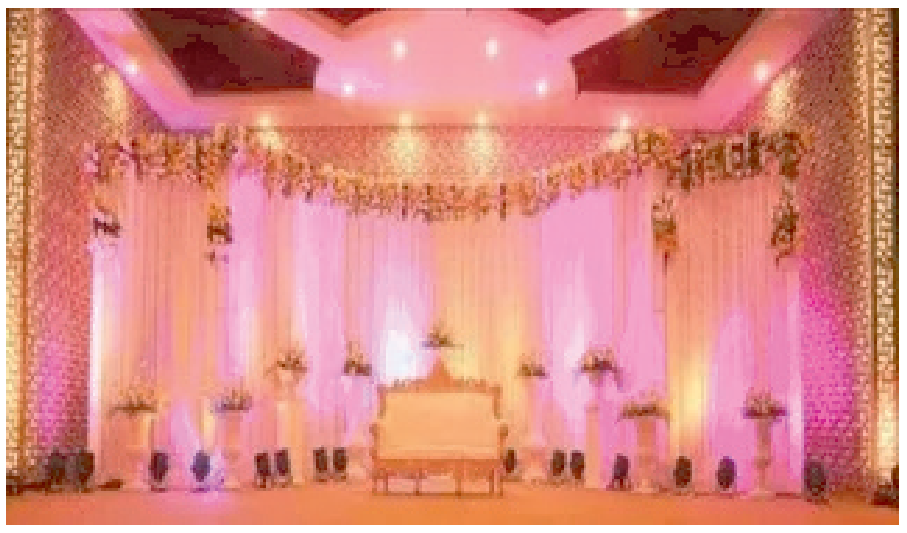

पंजाब के गाँवों की पहचान केवल उनके खेतों, हवेलियों और लहलहाती फसलों से नहीं रही है, बल्कि वहाँ के लोगों के आपसी प्रेम, भाईचारे और सामुदायिक जीवन से भी रही है। गाँवों में विवाह केवल दो व्यक्तियों या दो परिवारों का मिलन नहीं होता था, बल्कि यह पूरे गाँव के लिए खुशी, उत्साह और आपसी मेल-मिलाप का अवसर होता था। लेकिन समय के साथ विवाहों के तौर-तरीके भी बदल गए हैं। आज मैरिज पैलेसों की चमक-दमक, महँगी सजावट और दिखावे की होड़ ने गाँवों की उस सामुदायिक संस्कृति को काफी हद तक प्रभावित किया है, जिस पर कभी पंजाब गर्व करता था।

जब विवाह पूरे गाँव का उत्सव होता था

पुराने समय में गाँवों में विवाह की रौनक ही अलग होती थी। विवाह से कई दिन पहले ही घर में चहल-पहल शुरू हो जाती थी। पड़ोसी, रिश्तेदार और गाँव के अन्य लोग बिना किसी औपचारिक निमंत्रण की प्रतीक्षा किए सहायता के लिए पहुँच जाते थे। कोई राशन लाता, कोई बर्तन सँभालता, कोई चारपाइयाँ बिछाता और कोई मेहमानों की सेवा में जुट जाता था।

महिलाएँ एकत्र होकर सुहाग, घोड़ियाँ और अन्य पारंपरिक लोकगीत गाती थीं। बच्चों की किलकारियों, बुजुर्गों की सलाह और युवाओं के उत्साह से घर का आँगन जीवंत हो उठता था। भोजन बनाने से लेकर मेहमानों को खिलाने तक हर काम में लोगों की भागीदारी होती थी। इन अवसरों पर केवल काम ही नहीं बाँटा जाता था, बल्कि प्रेम, विश्वास और अपनापन भी बढ़ता था।

विवाह किसी एक परिवार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि पूरे गाँव की सामूहिक खुशी होता था।

मैरिज पैलेसों का बढ़ता चलन

आज मैरिज पैलेस विवाह समारोहों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गए हैं। सुंदर सजावट, रंग-बिरंगी रोशनी, वातानुकूलित हॉल, विभिन्न प्रकार के व्यंजन और पेशेवर व्यवस्थाएँ लोगों को सुविधाएँ प्रदान करती हैं। बड़े परिवारों के लिए मेहमानों की व्यवस्था करना भी कई बार आसान हो जाता है। इसलिए मैरिज पैलेसों के चलन को पूरी तरह गलत नहीं कहा जा सकता।

समस्या तब पैदा होती है, जब विवाह की सफलता का मापदंड मेहमानों की संख्या, व्यंजनों की विविधता, सजावट की कीमत और पैलेस की भव्यता बन जाता है। विवाह की वास्तविक खुशी और रिश्तों की गर्माहट कई बार दिखावे की भीड़ में खो जाती है।

पहले गाँव के लोग विवाह की तैयारियों में सक्रिय भाग लेते थे। आज अनेक जिम्मेदारियाँ ठेकेदारों, कैटरिंग सेवाओं और इवेंट मैनेजमेंट कंपनियों को सौंप दी जाती हैं। इससे व्यवस्थाएँ अधिक सुचारु हो सकती हैं, लेकिन लोगों को एक साथ बैठने, मिलकर काम करने और आपसी संबंध मजबूत करने के अवसर कम मिलते हैं।

घटती सामाजिक एकता और बढ़ती औपचारिकता

पहले विवाहों में गाँव के लोगों की भागीदारी अपने आप में एक रिश्ते का प्रतीक होती थी। किसी के घर विवाह होने पर गाँव का प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को उस खुशी का हिस्सा समझता था। आज अनेक विवाह सीमित मेहमानों, विशेष निमंत्रण-पत्रों और निर्धारित समय-सारिणी तक सीमित रह जाते हैं।

मैरिज पैलेस में मेहमान आते हैं, भोजन करते हैं, तस्वीरें खिंचवाते हैं और वापस चले जाते हैं। कई बार दूल्हा-दुल्हन के निकट संबंधियों को भी सभी मेहमानों से खुलकर मिलने का पर्याप्त समय नहीं मिलता। सामाजिक मेल-मिलाप का अवसर कई बार एक औपचारिक समारोह बनकर रह जाता है।

यह बदलाव प्रत्येक परिवार या गाँव में समान रूप से दिखाई नहीं देता, लेकिन यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न अवश्य खड़ा करता है—क्या हम विवाहों को अधिक भव्य बनाते हुए उनकी आत्मीयता खोते जा रहे हैं?

दिखावे की होड़ और आर्थिक बोझ

विवाहों में बढ़ता दिखावा परिवारों पर आर्थिक दबाव भी डालता है। महँगे मैरिज पैलेस, शानदार सजावट, अनेक प्रकार के व्यंजन, फोटोग्राफी और अन्य व्यवस्थाओं पर होने वाला खर्च कई बार परिवार की आय से कहीं अधिक हो जाता है। कुछ लोग सामाजिक प्रतिस्पर्धा या रिश्तेदारों की अपेक्षाओं के कारण अपनी आर्थिक क्षमता से अधिक खर्च करने के लिए विवश महसूस करते हैं।

इस दौड़ में विवाह की सादगी और वास्तविक खुशी पीछे छूट जाती है। जो पैसा बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार या भविष्य की सुरक्षा के लिए बचाया जा सकता था, वह कभी-कभी कुछ घंटों के दिखावे पर खर्च हो जाता है।

विवाह की प्रतिष्ठा उसके खर्च में नहीं, बल्कि रिश्तों की मजबूती, परिवारों की खुशी और नए जीवन की सुंदर शुरुआत में होनी चाहिए।

लोक-संस्कृति भी हो रही है प्रभावित

पंजाबी विवाहों की आत्मा उनके लोकगीतों, रीति-रिवाजों, हँसी-मजाक और साझा स्मृतियों में बसती थी। सुहाग, घोड़ियाँ, गिद्धा, बोलियाँ और पारंपरिक रस्में पीढ़ी-दर-पीढ़ी संस्कृति को आगे बढ़ाती रही हैं।

अब अनेक विवाहों में डीजे, तेज संगीत और तस्वीरों तथा वीडियो के लिए विशेष कार्यक्रम प्रमुख हो गए हैं। आधुनिक संगीत और नई परंपराएँ अपने आप में गलत नहीं हैं, लेकिन यदि इनके साथ हमारी लोक-परंपराओं को कोई स्थान न मिले, तो आने वाली पीढ़ियाँ अपनी सांस्कृतिक विरासत से दूर हो सकती हैं।

संस्कृति को बचाने का अर्थ अतीत में लौटना नहीं, बल्कि अपनी जड़ों को आधुनिक समय के साथ जोड़कर रखना है।

क्या पुरानी सामाजिक एकता फिर जीवित हो सकती है?

इसका उत्तर हाँ में है। इसके लिए मैरिज पैलेसों को छोड़ना या आधुनिक सुविधाओं का विरोध करना आवश्यक नहीं है। जरूरत इस बात की है कि विवाहों में सुविधाओं के साथ-साथ सामाजिक एकता और आपसी संबंधों को भी महत्व दिया जाए।

- सादगी को प्राथमिकता दें: विवाहों में अनावश्यक खर्च और दिखावे से बचें।

- गाँव के लोगों को जोड़ें: विवाह की तैयारियों में पड़ोसियों, मित्रों और रिश्तेदारों की भागीदारी को प्रोत्साहित करें।

- लोक-संस्कृति को सुरक्षित रखें: सुहाग, घोड़ियाँ, गिद्धा और पंजाबी बोलियों के लिए भी स्थान रखें।

- सामूहिक भोजन की भावना जीवित रखें: मेहमानों को केवल भोजन कराना ही नहीं, बल्कि उनके साथ बैठकर समय बिताना भी महत्वपूर्ण है।

- नई पीढ़ी को विरासत से जोड़ें: बच्चों को पुराने ग्रामीण विवाहों की परंपराओं और उनके पीछे छिपे सामाजिक मूल्यों के बारे में बताएँ।

गाँवों की पंचायतें, सामाजिक संस्थाएँ और युवा भी सादे विवाहों तथा सामुदायिक आयोजनों को प्रोत्साहित कर सकते हैं। ऐसे प्रयास सहयोग, समानता और आपसी सम्मान की भावना को मजबूत कर सकते हैं।

निष्कर्ष: पैलेस नहीं, रिश्ते बड़े हों

मैरिज पैलेस बदलती जीवनशैली और आधुनिक आवश्यकताओं का हिस्सा हो सकते हैं, लेकिन वे गाँवों की एकता, आपसी सहयोग और मानवीय संबंधों का स्थान नहीं ले सकते। इमारतों की भव्यता कुछ समय के लिए आँखों को आकर्षित कर सकती है, लेकिन लोगों का प्रेम जीवन भर दिलों में बसा रहता है।

हमें समझना होगा कि विवाह की वास्तविक खुशी महँगे पैलेसों, सजावट या व्यंजनों की संख्या में नहीं, बल्कि उस प्रेम में है जो दो परिवारों को जोड़ता है और पूरे समाज को एक-दूसरे के करीब लाता है।

पंजाब की वास्तविक रौनक उस दिन लौटेगी, जब विवाहों में मैरिज पैलेसों की चमक के साथ गाँवों के आँगनों की आत्मीयता, पड़ोसियों का अपनापन और मिल-बैठकर हँसने-खुशियाँ मनाने की परंपरा भी फिर से दिखाई देगी।

सेवानिवृत्त प्राचार्य। शैक्षिक स्तंभकार। प्रख्यात वैज्ञानिक गली कौर चंद, एम.एच.आर., मलोट, पंजाब – 152107

मिठाइयों का युग: स्वाद, परंपरा और स्वास्थ्य के बीच संतुलन

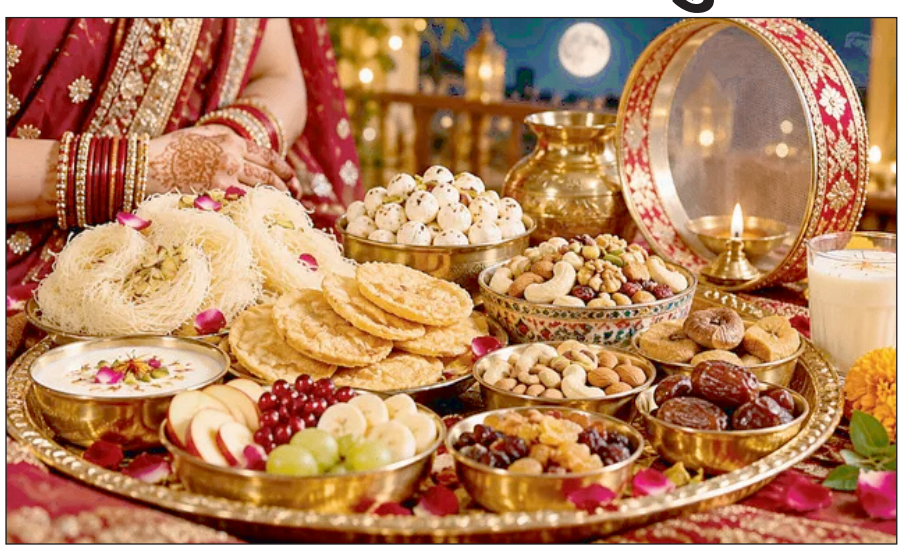

डॉ. विजय गर्ग

मिठाइयों का मानव जीवन में हमेशा से विशेष स्थान रहा है। त्योहारों, शादियों, जन्मदिनों और पारिवारिक समारोहों में मिठाइयाँ खुशी, प्रेम और आपसी सद्भाव का प्रतीक मानी जाती हैं। भारत में मिठाइयाँ केवल खाद्य पदार्थ नहीं हैं, बल्कि हमारी संस्कृति, परंपराओं और अतिथि सत्कार का अभिन्न हिस्सा हैं। लेकिन आधुनिक युग में मिठाइयों और चीनी का अत्यधिक सेवन स्वास्थ्य के लिए एक गंभीर चिंता का विषय बनता जा रहा है।

आज मिठाइयों की उपलब्धता पहले की तुलना में बहुत बढ़ गई है। लड्डू, जलेबी, गुलाब जामुन, रसगुल्ले और बर्फी जैसी पारंपरिक मिठाइयों के साथ-साथ चॉकलेट, केक, पेस्ट्री, आइसक्रीम और पैक किए गए मीठे खाद्य पदार्थों का चलन भी तेजी से बढ़ा है। आकर्षक विज्ञापन, बदलती जीवनशैली और आसानी से उपलब्धता लोगों, विशेषकर बच्चों को आवश्यकता से अधिक मीठा खाने के लिए प्रेरित करती है।

चीनी शरीर को तुरंत ऊर्जा प्रदान करती है, लेकिन इसका अत्यधिक सेवन गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकता है। मीठे खाद्य पदार्थों और पेय पदार्थों का नियमित और अधिक सेवन मोटापे, टाइप-2 मधुमेह, दाँतों की बीमारियों और चयापचय संबंधी समस्याओं का खतरा बढ़ाता है। लंबे समय में यह हृदय स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है। जो बच्चे बार-बार मीठे स्नैक्स खाते हैं, उनमें अस्वस्थ खान-पान की आदतें विकसित हो सकती हैं, जो आगे चलकर भी बनी रहती हैं।

एक अन्य महत्वपूर्ण चिंता छिपी हुई चीनी की है। कई पैकेटबंद खाद्य पदार्थों, नाश्ते के सीरियल, बिस्कुट, स्वादयुक्त पेय पदार्थों, सॉस और प्रसंस्कृत स्नैक्स में अतिरिक्त चीनी मिलाई जाती है। उपभोक्ता अक्सर इस पर ध्यान नहीं देते, क्योंकि इन उत्पादों का प्रचार सुविधाजनक या स्वास्थ्यवर्धक बताकर किया जाता है। इसलिए खाद्य पदार्थों के लेबल को ध्यानपूर्वक पढ़ना आवश्यक है।

इस समस्या का समाधान मिठाइयों को पूरी तरह छोड़ना नहीं, बल्कि संयम और जागरूकता अपनाना है। पारंपरिक मिठाइयों का कभी-कभी सीमित मात्रा में आनंद लिया जा सकता है। ताजे फल, खजूर और प्राकृतिक मिठास वाले खाद्य पदार्थ अच्छे विकल्प हो सकते हैं। परिवारों को बच्चों में स्वस्थ खान-पान की आदतें विकसित करनी चाहिए और मिठाइयों को नियमित रूप से पुरस्कार के रूप में देने से बचना चाहिए।

पोषण संबंधी जागरूकता बढ़ाने में माता-पिता और विद्यालयों की महत्वपूर्ण भूमिका है। बच्चों को पूरे फलों में मौजूद प्राकृतिक शर्करा और प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों में मिलाई गई अतिरिक्त चीनी के बीच अंतर समझाना चाहिए। विद्यालयों में फलों, मेवों और घर पर बने पौष्टिक खाद्य पदार्थों के साथ उत्सव मनाने को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

खाद्य पदार्थ बनाने वाली कंपनियों को भी अपनी जिम्मेदारी समझनी चाहिए। उन्हें अनावश्यक अतिरिक्त चीनी की मात्रा कम करनी चाहिए और उत्पादों पर पोषण संबंधी सही जानकारी उपलब्ध करानी चाहिए। सरकार और स्वास्थ्य संगठनों को भी चीनी के अत्यधिक सेवन से होने वाले नुकसान के बारे में जागरूकता अभियान चलाने चाहिए।

हमारी पारंपरिक खाद्य संस्कृति का सम्मान करना आवश्यक है, लेकिन वैज्ञानिक समझ के अनुसार उसमें बदलाव करना भी समय की मांग है। खुशियाँ मनाने के लिए अधिक मात्रा में मिठाइयाँ खाना जरूरी नहीं है। वास्तविक खुशी अच्छे रिश्तों, साझा अनुभवों और उत्तम स्वास्थ्य में निहित है।

संदेश स्पष्ट है—मिठाइयों का आनंद लें, लेकिन उनके आदी न बनें। एक स्वस्थ समाज वही है, जो स्वाद और पोषण के बीच संतुलन बनाना जानता है। आइए, मिठास को अपने उत्सवों का हिस्सा बनाएँ, अपने स्वास्थ्य पर बोझ नहीं।

सेवानिवृत्त प्राचार्य। प्रख्यात वैज्ञानिक
स्ट्रीट कौर चंद,
एम.एच.आर., मलोट, पंजाब – 152107

गाजियाबाद पुलिस की बड़ी लापरवाही थाना, परिजनों के खोजने के दौरान बुजुर्ग का लावारिस में कराया अंतिम संस्कार

परिवहन विशेष न्यूज

गाजियाबाद के वेव सिटी थाना क्षेत्र के लालकुआं निवासी 69 वर्षीय पुरुषोत्तम यादव घर से लापता हो गए थे। बेटे वरुण यादव ने 1 अक्टूबर को वेव सिटी थाने में पिता की गुमशुदगी दर्ज कराई थी।

परिजन लगातार पुलिस से पिता को खोजने की गुहार लगाते रहे। 2 अक्टूबर को पुरुषोत्तम यादव विजयनगर थाना क्षेत्र में सड़क हादसे में घायल मिले थे।

लोगों ने उन्हें जिला अस्पताल एम. एम.जी में भर्ती कराया, जहां से संयुक्त जिला अस्पताल संजयनगर रेफर किया गया। इलाज के दौरान 6 अक्टूबर को बुजुर्ग की मौत हो गई।

विजयनगर पुलिस ने पहचान नहीं होने पर 10 अक्टूबर को शव का लावारिस में अंतिम संस्कार करा

दिया।

हैरानी की बात यह है कि वेव सिटी पुलिस 6 अक्टूबर को बुजुर्ग की तलाश में विजयनगर थाने पहुंची थी और गुमशुदगी का नोटिस भी चस्पा किया था।

इसके बावजूद दोनों थानों के बीच समन्वय नहीं हुआ और परिजनों को बुजुर्ग की मौत की जानकारी तक नहीं मिली।

बेटी ने एडिशनल पुलिस कमिश्नर मुख्यालय केशव कुमार चौधरी से शिकायत कर कार्रवाई की मांग की।

एडिशनल पुलिस कमिश्नर ने मामले की जांच ACP कविनगर अभय राजेंद्र डागा को सौंपी है।

जांच के बाद लापरवाही बरतने वाले पुलिसकर्मियों पर कार्रवाई की जाएगी।

बोधगया में 26 नवंबर से जुटेंगे देशभर के अंग्रेजी साहित्य के विद्वान, 69वां राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित

300 से अधिक प्रतिभागियों का पंजीकरण, साहित्य, भाषा, संस्कृति और सामाजिक बदलाव पर होगा मंथन

बोधगया। मगध विश्वविद्यालय, बोधगया के अंग्रेजी विभाग एवं शोध केंद्र की ओर से एसोसिएशन फॉर इंग्लिश स्टडीज ऑफ इंडिया (एईएसआई) के तत्वावधान में 69वें अखिल भारतीय अंग्रेजी शिक्षक सम्मेलन की तैयारियां जोर-शोर से चल रही हैं। तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन 26 से 28 नवंबर तक आयोजित होगा। इसका विषय 'परिवर्तन के आख्यान : साहित्य, भाषा और समाज की पड़ताल' रखा गया है।

सम्मेलन में देशभर के विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों एवं शोध संस्थानों से शिक्षक, शोधार्थी और शिक्षाविद शामिल होंगे। अब तक 300 से अधिक प्रतिभागियों का पंजीकरण हो चुका है। सम्मेलन में अंग्रेजी भाषा शिक्षण, अनुवाद, भारतीय अंग्रेजी साहित्य, पर्यावरण विमर्श, डिजिटल मानविकी, आदिवासी साहित्य तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता के दौर में साहित्य जैसे विषयों पर चर्चा होगी।

सम्मेलन के स्थानीय सचिव एवं अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डॉ. नीरज कुमार ने कहा कि बोधगया की ऐतिहासिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक पहचान इसे राष्ट्रीय शैक्षणिक आयोजन के लिए उपयुक्त स्थल बनाती है। एईएसआई के महासचिव प्रो. विकास शर्मा ने इसे देशभर के विद्वानों के बीच अकादमिक संवाद का महत्वपूर्ण मंच बताया।

सम्मेलन समन्वयक प्रो. डॉ. सुशील कुमार ने बताया कि पंजीकरण, आवास, शोधपत्र प्रस्तुति एवं प्रकाशन की व्यवस्था की जा रही है। एईएसआई के अध्यक्ष प्रो. डीसी गौतम ने कहा कि सम्मेलन से साहित्य और सामाजिक सरोकारों पर अंतरविषयक विमर्श को बढ़ावा मिलेगा। आयोजन में पूर्णेंदु कुमार, रश्मि प्रियदर्शनी, डॉ. शोभा सहित अन्य लोगों का सहयोग मिल रहा है।

हाईकोर्ट में मामला विचाराधीन होने के बावजूद बेनियाबाग शॉपिंग कॉम्प्लेक्स को ध्वस्त करने की कार्यवाही पर दुकानदारों ने जताई चिंता,नगर आयुक्त से की मुलाकात

नगर आयुक्त ने व्यापारियों को दिया आश्वासन वैक्लपिक व्यवस्था के तहत दुकान दी जाएगी

(संतोष कुमार सिंह)

वाराणसी :- बेनियाबाग स्थित नगर निगम के शॉपिंग कॉम्प्लेक्स को जर्जर घोषित कर ध्वस्त करने की कार्यवाही किए जाने के प्रयास को लेकर दुकानदारों में चिंता और नाराजगी व्याप्त है। इस संबंध में दुकानदारों ने नगर निगम पहुंचकर संबंधित अधिकारियों से मुलाकात की और अपनी आपत्तियों एवं समस्याओं से अवगत कराते हुए न्यायालय में मामला विचाराधीन रहने तक किसी भी प्रकार की जल्दबाजी में कार्यवाही नहीं करने की मांग की। दुकानदारों का कहना है कि बेनियाबाग शॉपिंग कॉम्प्लेक्स से जुड़ा मामला उच्च न्यायालय में विचाराधीन है तथा आगामी 18 नवम्बर को इसकी अगली सुनवाई निर्धारित है ऐसे में न्यायालय में प्रकरण लंबित होने के बावजूद ध्वस्तीकरण की कार्रवाई किए जाने के प्रयास से दुकानदारों के बीच असमंजस और भविष्य को लेकर चिंता बढ़ गई है।

इसी क्रम में अधिवक्ता आकाश पाण्डेय, पूर्व पार्षद शंकर विष्णानी,रविकांत विश्वकर्मा,राहुल गुप्ता,रतन सोहबतिया, अरमान हासमी,संदीप मिश्रा सहित अन्य दुकानदार नगर निगम पहुंचे उन्होंने अधिकारियों के समक्ष अपना पक्ष रखते हुए कहा कि जब तक न्यायालय में विचाराधीन मामले का निस्तारण नहीं हो जाता,तब तक ध्वस्तीकरण जैसी कोई भी कार्यवाही जल्दबाजी में नहीं की जानी चाहिए। दुकानदारों ने नगर आयुक्त से आग्रह किया कि न्यायालय की गरिमा एवं उसके आदेशों का पूरा सम्मान किया जाए साथ ही सभी संबंधित पक्षों को सुनने और मामले के कानूनी पहलुओं पर विचार करने के बाद ही नियमानुसार उचित निर्णय लिया जाए।

दुकानदारों ने स्पष्ट किया कि वे नियमानुसार होने वाली प्रक्रिया में सहयोग करने को तैयार हैं लेकिन न्यायालय में मामला लंबित रहने के दौरान किसी भी एक तरफा कार्यवाही से उनके हित प्रभावित नहीं होने चाहिए। नगर आयुक्त ने व्यापारियों को दिया आश्वासन वैक्लपिक व्यवस्था के तहत दुकान दी जाएगी आगे जब दुकाने बनेगी तो सभी दुकानदारों को स्थायी दुकान उपलब्ध कराया जायेगा।।

रन फॉर यूनिटी मैराथन 31को विकास कार्यों पर फोकस

परिवहन विशेष न्यूज

खूंटी। सरदार वल्लभभाई पटेल जयंती पर 31 अक्टूबर को प्रातः 7 बजे बिरसा मुंडा फुटबॉल स्टेडियम खूंटी से 'Run for Unity Marathon' का आयोजन होगा

उपायुक्त मो० जावेद हुसैन की अध्यक्षता में समाहरणालय स्थित कार्यालय कक्ष में जिला खेल एवं पर्यटन समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में जिले में खेल एवं पर्यटन से संबंधित निर्माणाधीन तथा संचालित योजनाओं की प्रगति की समीक्षा करते हुए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।पर्यटन क्षेत्र में पंचघाघ पर्यटन स्थल पर रिपेयरिंग, ब्रिक वर्क, पाथवे, शेड, शौचालय, कैंटीन भवन, तोरण द्वार समेत अन्य से संबंधित कार्यों में की समीक्षा की गई। उपायुक्त ने विभिन्न स्थानों पर साइनेज बोर्ड लगाने एवं क्षेत्र को नो प्लास्टिक जोन घोषित करने के निर्देश दिए। जिससे क्षेत्र को स्वच्छ रखा जा सके।उलिहातू स्थित भगवान बिरसा मुंडा की जन्मस्थली में चल रहे जीर्णोद्धार कार्य की समीक्षा करते हुए सभी विकास कार्यों को गुणवत्तापूर्ण एवं ससमय सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

पेरवाघाघ पर्यटन स्थल पर चल रहे कार्यों की समीक्षा के क्रम में संबंधित कार्यपालक अभियंता ने बताया कि लग भग कार्य पूर्ण कर लिया गया है, उपायुक्त ने शेष बचे कार्य को भी जल्द पूर्ण करने के निर्देश दिए। डोम्बारी बुरु में पाथवे, रेलिंग, लाइट समेत अन्य विकास कार्य हेतु सभी दस्तावेज पूर्ण कर कार्य प्रारंभ करने के निर्देश दिए।बैठक में उपायुक्त ने जिले के पर्यटन स्थलों पर ट्रेकिंग की संभावनाओं को देखते हुए उपयुक्त ट्रेकिंग रूटों को चिह्नित कर आवश्यकतानुसार विकसित करने का निर्देश दिया, ताकि पर्यटन गतिविधियों को और बढ़ावा मिल सके।

खेल क्षेत्र की समीक्षा के क्रम में उपायुक्त ने सभी विद्यालयों में खूँटी खेल महोत्सव के तहत खेल प्रतियोगिता का आयोजन को लेकर निर्देश दिए गए। वहीं रानियां समेत अन्य निर्माणाधीन स्टेडियम कार्य की समीक्षा कर सभी कार्यों को जल्द पूर्ण करने के निर्देश दिए। उपायुक्त ने 'Run for Unity Marathon' में जिलावासियों से भाग लेने की अपील की है।

पीसीसी पथ का शिलान्यास...

खूंटी। जिले के तपकरा लोवाजिमी मेन रोड से हाबिल गुड़िया भाया जोहन गुड़िया के घर तक पीसीसी पथ 450 फीट निर्माण का शिलान्यास विधिवत किया गया, पाहन धनी गुड़िया के द्वारा पूजा अर्चना किया गया। मौके पर जिला परिषद अध्यक्ष मसीह गुड़िया ने कहा विकास कार्य में ग्रामीण आम जनता का सहयोग होना अति आवश्यक है इसके बिना अधूरा है। मौके पर माननीय जिला परिषद अध्यक्ष मसीह गुड़िया, फटका पंचायत मुखिया पुष्पा गुड़िया,उप मुखिया अरफा गुड़िया,विमल गुड़िया, अनिल गुड़िया,सोहराई पाहन, गुड़िया पडहा राजा हाबिल गुड़िया, इलियास गुड़िया एलिजाबेथ बरला, रवि गुड़िया सुखराम गुड़िया ग्रामीण आदि उपस्थित थे।

तेज हवाओं और बारिश से धान की फसलों को हुआ नुकसान , किसानों की बढ़ी मुसीबत

गोरखपुर। जनपद में हुई मध्यम बारिश और तेज हवाओं ने किसानों की कमर तोड़ दी है। धान की तैयार फसल पर मौसम की इस बेरुखी ने पानी फेर दिया है, जिससे किसानों के सामने भारी संकट खड़ा हो गया है। मालूम हो कि इस समय धान की फसल पूरी तरह तैयार हो चुकी है। कई किसान कंबाइन मशीन और हाथों से फसल की कटाई कर मड़ाई के काम में जुटे थे। वहीं, जिन किसानों की फसल खेतों में पक चुकी थी और वे मशीनों का इंतजार कर रहे थे, तेज हवाओं ने उनकी उम्मीदों पर पानी फेर दिया। हवा के झोंकों से अधिकतर फसल खेतों में ही गिर गई है। मौसम का मिजाज गुरुवार, 29 अक्टूबर से ही बिगड़ा हुआ था। हालांकि, गुरुवार को हुई बूंदाबांदी से फसल को कोई खास नुकसान नहीं हुआ था, लेकिन शुक्रवार, 30 अक्टूबर को तेज हवाओं के साथ हुई मध्यम बारिश ने तबाही मचा दी। खेतों में गिरी हुई फसल में पानी भरने से धान के सड़ने और गुणवत्ता खराब होने का डर सता रहा है। फसल के गिर जाने से अब मशीनों से कटाई करना भी मुश्किल हो जाएगा, जिससे लागत और मेहनत दोनों बढ़ने वाली है। साल भर की मेहनत के बाद जब फसल घर आने वाली थी, तब प्रकृति के इस वार ने किसानों को गहरे संकट में डाल दिया है।

दुनिया के लोकतंत्रों पर विदेशी सत्ता परिवर्तन का साया!

इजरायल के चुनाव से भारत, फ्रांस, स्पेन और अल्बानिया तक उठे गंभीर सवाल – विदेशी फंडिंग, वोट चोरी, जनआक्रोश और राजनीतिक नेटवर्क के जरिए रिजीम चेंज की आशंका? कौन बिछा रहा है वैश्विक जाल?

लेखक: एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी, गोंदिया महाराष्ट्र परिवहन विशेष समाचार पत्र

लीड: वैश्विक राजनीति में आज सबसे बड़ा सवाल - क्या जनआंदोलन केवल जनता की वास्तविक समस्याओं का परिणाम हैं या इनके पीछे विदेशी धन, डिजिटल प्रचार और राजनीतिक नेटवर्क के जरिए सत्ता परिवर्तन की सुनियोजित योजना काम कर रही है? इजरायल के 27 अक्टूबर 2026 के चुनाव ने इस बहस को ताजा कर दिया है।

मुख्य बिंदु:

1. इजरायल चुनाव - 120 सीटों का गणित और 19 अरब सीटों का उभार:
   - 120 सदस्यीय नेसेट में बहुमत के लिए 61 सीट जरूरी
   - नेतन्याहू समर्थक गठबंधन को 53 सीट, परिवर्तनवादी विपक्ष (आइजेनकोट) को 48 सीट, अरब पार्टियों को रिकॉर्ड 19 सीट
   - पार्टीवार: लिकुड 27, याशर 21, बियाखद 12, संयुक्त अरब सूची 11, डेमोक्रेट्स 8, रा'म 8, यिसराइल बेतेनु 7, ओत्जमा येहुदित 7, यूनाइटेड टोरा 7, शास 6, धार्मिक जायनिज्म 6
   - मतदान 77.9% - 57 लाख मतदाता
   - अरब पार्टियां किंगमेकर की भूमिका में

2. विदेशी हस्तक्षेप के आरोप - जांचाधीन तथ्य:

- नेतन्याहू और लिकुड का आरोप - अरब मतदाताओं में धन वितरण, वोट खरीद, दोहरा मतदान
- मीडिया में कतर से धन और तुर्की की भूमिका की आशंका
- सुप्रीम कोर्ट न्यायाधीश नोआम सोलबर्ग ने शिन बेट को जांच के निर्देश दिए
- महत्वपूर्ण: कतर और तुर्की ने आरोपों को खारिज किया, चुनाव समिति ने व्यापक धांधली को आधारहीन बताया - आरोप अभी जांचाधीन, सिद्ध नहीं

3. फ्रांस - शिक्षा से महंगाई विरोध तक:

- सितंबर अंत 2026 में शिक्षकों की कमी और सुविधाओं के खिलाफ छात्र आंदोलन
- अक्टूबर में पेरिस सहित शहरों में 3 लाख प्रदर्शनकारी
- फॉक्स न्यूज डिजिटल 9 अक्टूबर रिपोर्ट - 50 संगठन (15 छात्र/युवा + श्रमिक संघ, वामपंथी दल, मीडिया) सक्रिय - लेकिन संगठनात्मक संबंध षड्यंत्र का प्रमाण नहीं

4. स्पेन - आवास संकट से चुनाव तक:

- मैड्रिड में 87 वर्षीय मारिकमेंन अबास्कल की बेदखली बनी प्रतीक
- किराया नियंत्रण और किफायती आवास की मांग
- प्रधानमंत्री पेद्रो सांचेज ने 29 नवंबर को मध्यावधि चुनाव का आह्वान किया

5. अल्बानिया - भ्रष्टाचार और विदेशी निवेश विवाद:

- ज्वेनेंक में संरक्षित आर्द्रभूमि के पास लक्जरी प्रोजेक्ट - जेरेड कुशनर से जुड़े निवेश की चर्चा
- भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, शिक्षा पर आंदोलन

6. भारत - SIR पर बहस और अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क की चर्चा:

- मतदाता सूची विशेष गहन पुनरीक्षण (SIR) पर विरोध, नाम हटाने के सवाल
- दिल्ली में मुख्य चुनाव आयुक्त के इस्तीफे की मांग पर प्रदर्शन
- प्रोग्रेसिव इंटरनेशनल 16 अक्टूबर ब्रीफिंग में भारत, फ्रांस, स्पेन, अल्बानिया आंदोलनों का एक साथ उल्लेख
- फॉक्स न्यूज 21 अक्टूबर रिपोर्ट - 9 देशों के 101 संगठनों का नेटवर्क, नेविल रॉय सिंघम फंडिंग चर्चा - लेकिन समर्थन करना और सरकार गिराने की साजिश एक समान नहीं

7. रिजीम चेंज कैसे काम करती है - 6 माध्यम:

1. आर्थिक असंतोष - महंगाई, बेरोजगारी, महंगा आवास
2. संगठित जनआंदोलन - छात्र, श्रमिक, सामाजिक संस्थाएं
3. डिजिटल प्रचार - सोशल मीडिया, वीडियो, अंतरराष्ट्रीय मीडिया
4. आर्थिक/राजनीतिक समर्थन - विदेशी अनुदान, संपर्क
5. कूटनीतिक दबाव - प्रतिबंध, वैधता पर सवाल
6. राजनीतिक गठबंधन - रणनीति और आंतरिक असंतोष का उपयोग

नोट: नागरिक संगठन, स्वतंत्र मीडिया, शांतिपूर्ण प्रदर्शन वैध हैं। समस्या तब जब गुप्त विदेशी धन, अवैध वित्तपोषण, दुष्प्रचार, साइबर हस्तक्षेप और संस्थाओं को कमजोर करने के प्रयास हों। जांच बैंकिंग रिकॉर्ड, वित्तीय लेन-देन और स्वतंत्र साक्ष्य से होनी चाहिए।

संपादकीय टिप्पणी: लोकतंत्र में प्रदर्शन अधिकार है, लेकिन राष्ट्रीय संप्रभुता पर सवाल उठे तो तथ्य और अफवाह में अंतर जरूरी है।

कोयला की भूमिगत आग बनेगा स्वच्छ ऊर्जा, गिनीज बुक में नाम होगा दर्ज

चुनौती को अवसर में बदलने पर एक लाख की रकम जीता डिनोबिली स्कूल

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, कोयलांचल की भूमिगत आग और रिसती जहरीली मीथेन गैस दशकों से क्षेत्र के लिए जानलेवा संकट बनी हुई थी, अब उसी संकट से स्वच्छ ऊर्जा का नया सवेरा होगा।

इस गंभीर पर्यावरणीय व मानवीय चुनौती को अवसर में बदलने का वैज्ञानिक समाधान डिनोबिली स्कूल डिगवाडीह की टीम डीएनएस नवऊर्जा ने भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा आयोजित प्रतिष्ठित विकसित भारत बिल्डाथॉन 2025 के ग्रैंड फिनाले में देश की शीर्ष 10 टीमों में स्थान बनाकर राष्ट्रीय स्तर पर झारखंड का गौरव बढ़ाया है।

नई दिल्ली स्थित सुषमा स्वराज भवन में आयोजित समारोह में केंद्रीय शिक्षा राज्य मंत्री जयंत चौधरी ने टीम को एक लाख के नकद पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया

देशभर से 2.87 लाख से अधिक नवाचार परियोजनाओं की भागीदारी वाली इस प्रतियोगिता को दुनिया की सबसे बड़ी नवाचार समाधान प्रतियोगिता के रूप में गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज किया गया है। देशभर से 2.87 लाख से अधिक नवाचार परियोजनाओं की भागीदारी वाली इस प्रतियोगिता को दुनिया की सबसे बड़ी नवाचार समाधान प्रतियोगिता के रूप में गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज किया गया है।

देश के हजारों प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों के बीच जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर के तीन कड़े व चुनौतीपूर्ण चरणों को सफलतापूर्वक पार कर शीर्ष 10 में जगह बनाना पूरे कोयलांचल के लिए ऐतिहासिक उपलब्धि है।

झरिया की खदानों में दशकों से सुलग रही आग न केवल जान-माल का नुकसान करती है, बल्कि उससे निकलने वाली मीथेन गैस पर्यावरण को भारी नुकसान पहुंचाती है।

टीम ने इस समस्या का व्यावहारिक समाधान पेश करते हुए एक ऐसा वैज्ञानिक मॉडल तैयार किया। जिससे भूमिगत खदानों से रिसने वाली मीथेन गैस को सुरक्षित रूप से एकत्र किया जा सके। एकत्र की गई गैस को शोधित कर सीएनजी और विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित किया जा सके।

सरायकेला जिला मे बंद पडे कोहिनूर स्टील में ईडी की छापेमारी

थर्मल पॉवर यूनिट के नाम 290 करोड़ लोन 100से अधिक सेल खाते में धनराशि डायवर्ट

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, पश्चिम बंगाल के हावड़ा, उत्तरपाड़ा (हुगली), लेक टाउन और आसनसोल में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की शुक्रवार सुबह की छापेमारी का सीधा संबंध झारखंड के सरायकेला जिला के कांड्रा-चांडिल इलाके से है। ईडी की टीमें कोहिनूर ग्रुप के चार्टर्ड अकाउंटेंट और उनके सहयोगियों के आवासों पर पहुंचीं। वित्तीय रिकॉर्ड, हार्ड डिस्क और डिजिटल उपकरण जब्त कर जांच तेज कर दी गई।

मामला कोहिनूर पावर प्राइवेट लिमिटेड से जुड़ा है। कंपनी ने सरायकेला-खरसवां जिले के चांडिल थाना क्षेत्र के कुचिडीह गांव (कांड्रा-चौका रोड) में 66 मेगावाट कोयला आधारित थर्मल पावर प्लांट लगाने के नाम पर बैंकों से करीब 290 करोड़ रुपये का ऋण लिया था। यह जगह जमशेदपुर से महज 25-30 किलोमीटर दूर है।

आरोप है कि ऋण की रकम को निर्धारित परियोजना में लगाने के बजाय सुनियोजित तरीके से ग्रुप की सौ से अधिक शेल कंपनियों के खातों में डायवर्ट कर निजी संपत्तियां खरीदने और व्यक्तिगत खर्चों में इस्तेमाल किया गया

वर्ष 2005 में कोहिनूर ग्रुप ने झारखंड सरकार के साथ एमओयू साइन किया था। इसके तहत स्पंज आयरन, टीएमटी बार और कैप्टिव पावर प्लांट का प्रोजेक्ट शुरू होना था। कांड्रा-कुचिडीह में जमीन ली गई और दिखावटी ढांचा खड़ा किया गया।

इसी आधार पर 2008 से 2013 के बीच बैंक ऑफ बड़ौदा की अगुवाई वाले कंसोर्टियम (बैंक ऑफ इंडिया, पीटीसी इंडिया फाइनेंस, कॉर्पोरेशन बैंक, आईएफसीआई समेत) से करीब 244-290 करोड़ रुपये की क्रेडिट सुविधा मंजूर कराई गई। परियोजना की समय सीमा कई बार बढ़ाई गई, लेकिन 2016 तक भी प्लांट पूरा नहीं हुआ।

जांच में सामने आया कि कंपनी ने फर्जी दस्तावेज, गलत जानकारी और खातों में हेराफेरी करके बैंकों को गुमराह किया। फंड को बोगस लेनदेन के जरिए संबंधित कंपनियों में पहुंचाया गया।

बाद में प्रमोटर्स विजय बोथरा, प्रशांत बोथरा और उनके परिवार के नाम पर कोलकाता व आसपास दर्जनों संपत्तियां खरीदी गईं, जिनसे करीब 26 लाख रुपये मासिक किराया भी मिल रहा था। बैंक ऑफ बड़ौदा ने 2015 में खाते को एनपीए घोषित कर दिया। 2018 में एनसीएलटी में दिवालिया प्रक्रिया शुरू हुई और 2019 में लिक्विडेशन का आदेश हुआ। परिसमापन में बैंकों को महज करीब सात करोड़ रुपये ही वापस मिले, यानी 97.5 प्रतिशत से ज्यादा नुकसान।

स्थानीय स्तर पर तस्वीर साफ है। आदित्यपुर के आशियाना ट्रेड सेंटर में कंपनी का ऑफिस लंबे समय से बंद पड़ा है। कांड्रा-चांडिल रोड पर स्थित कोहिनूर स्टील प्लांट (जहां कैप्टिव पावर प्लांट भी था) पर ताला लगा हुआ है। 2006 में उत्पादन शुरू होने के बाद कुछ गतिविधियां चलीं, लेकिन बाद में सब ठप पड़ गया।

ईडी ने सितंबर 2026 में कोलकाता में प्रमोटर्स, निदेशकों और ऑडिटरों के 11-12 ठिकानों पर छापेमारी की थी। अब हावड़ा, हुगली, लेक टाउन और आसनसोल में चार्टर्ड अकाउंटेंट व सहयोगियों के परिसरों की तलाशी से मनी ट्रेल को और मजबूत किया जा रहा है। जांच में शेल कंपनियों के जरिए फंड डायवर्जन और मनी लॉन्ड्रिंग के सबूत जुटाए जा रहे हैं। यह घोटाला दिखाता है कि कांड्रा-चांडिल की धरती पर पावर प्लांट के नाम पर लिया गया बैंकों का पैसा कैसे डूब गया। आदित्यपुर का बंद ऑफिस और प्लांट पर लगा ताला इसकी गवाही दे रहा है। ईडी की जांच जारी है।

बाढ़ से निपटने को लेकर BJD ने सरकार को घेरा, उपमुख्यमंत्री के.वी. सिंहदेव ने दिया जवाब

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओडिशा

भूबनेश्वर : गंजाम में बाढ़ की स्थिति को लेकर बीजू जनता दल (BJD) ने राज्य सरकार पर तीखा हमला बोला है। बाढ़ से निपटने के लिए उचित तैयारी नहीं करने का आरोप लगाते हुए विपक्ष की मुख्य सचेतक प्रमिला मलिक ने सरकार को निशाने पर लिया। प्रमिला मलिक ने कहा कि गंजाम के प्रति राज्य सरकार की कोई गंभीरता नहीं है। जानबूझकर तटबंधों का निर्माण और मरम्मत नहीं कराई गई। उन्होंने आरोप लगाया कि जाजपुर की दोनों विधानसभा सीटों पर BJD के विधायक होने के कारण तटबंधों में हुए कटाव की मरम्मत नहीं कराई गई।

उन्होंने सरकार के उस दावे पर भी सवाल उठाया, जिसमें 50 हजार लोगों को एयरलिफ्ट करने की बात कही गई है। प्रमिला मलिक ने इसे सफेद झूठ बताते हुए सरकार से पूछा कि उसके पास कितने हेलीकॉप्टर हैं। उन्होंने यह भी सवाल किया कि जिलों के प्रभारी मंत्री क्या कर रहे थे और किसके साथ बैठक कर रहे थे? इसी तरह, BJD के उपाध्यक्ष प्रताप जेना ने कहा कि गंजाम और गजपति जिलों के लिए सरकार ने केवल अखबारों और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में ही तैयारियां दिखाई थीं। यदि सरकार ने पहले से तैयारी की थी, तो बांधों से पानी की निकासी क्यों नहीं की गई? बांधों का पानी उफनकर गांवों में घुस गया। उन्होंने सवाल उठाया कि पहले से सूचना होने के बावजूद सरकार सतर्क क्यों नहीं हुई? आज लोग अपने घरों में बाढ़ के पानी से घिरे हुए हैं और सरकार पूरी तरह विफल साबित हुई है। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार बाढ़ और चक्रवात जैसी आपदाओं का सही ढंग से प्रबंधन नहीं कर पाई है।

दूसरी ओर, BJD के आरोपों का कड़ा जवाब देते हुए उपमुख्यमंत्री के.वी. सिंहदेव ने कहा कि सरकार का मुद्दा BJD नहीं, बल्कि ओडिशा की जनता का हित है। सरकार राजनीति करने के बजाय लोगों की सेवा और उनकी समस्याओं के समाधान के लिए काम कर रही है।

उन्होंने कहा कि सरकार गठन के बाद से प्रत्येक प्राकृतिक आपदा के दौरान मंत्रियों को जिम्मेदारी सौंपकर प्रभावित क्षेत्रों में भेजा जाता रहा है। वरिष्ठ अधिकारी भी नुकसान का आकलन कर रहे हैं।

सिंहदेव ने पूर्ववर्ती BJD सरकार पर सवाल उठाते हुए पूछा कि क्या उसके कार्यकाल में बाढ़ और चक्रवात के दौरान नुकसान का आकलन करने के लिए मंत्रियों को जिम्मेदारी देकर जमीनी स्तर पर भेजा जाता था? उन्होंने कहा कि सरकार केवल हवाई सर्वेक्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि सरकार के प्रतिनिधि जमीनी स्तर पर जाकर लोगों की समस्याएं सुन रहे हैं और उनका समाधान करने का प्रयास कर रहे हैं। उपमुख्यमंत्री ने आरोप लगाया कि BJD इस आपदा के मुद्दे का राजनीतिकरण कर रही है। उन्होंने स्पष्ट किया कि सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता ओडिशा की जनता की सेवा करना और आपदा प्रभावित लोगों की समस्याओं का समाधान करना है।

रेलवे बुनियादी ढांचे, यात्री सुविधाओं और क्षेत्रीय रेल संपर्क पर सांसदों ने की विस्तृत चर्चा

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओडिशा

भुवनेश्वर : पूर्व तट रेलवे के संबलपुर रेल मंडल के अंतर्गत आने वाले माननीय सांसदों की मंडलीय समिति की बैठक आज संबलपुर में आयोजित की गई। बैठक में पूर्व तट रेलवे के महाप्रबंधक श्री परमेश्वर फुंकवाल सहित वरिष्ठ रेल अधिकारी उपस्थित थे। ओडिशा और छत्तीसगढ़ के माननीय सांसदों ने बैठक में भाग लिया और क्षेत्र में रेलवे के विकास से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की। बैठक में उपस्थित सांसदों ने राज्यसभा सांसद श्री सुजीत कुमार को सर्वसम्मति से मंडलीय समिति का अध्यक्ष निर्वाचित किया। इस बैठक में महासमुंद की लोकसभा सांसद श्रीमती रूप कुमारी चौधरी तथा कंधमाल के लोकसभा सांसद श्री सुकांत कुमार पाणिग्राही शामिल हुए। इसके अलावा संबलपुर, बरगढ़, बलांगीर और कालाहांडी के माननीय सांसदों के प्रतिनिधि भी बैठक में उपस्थित थे। सांसदों ने संबलपुर रेल मंडल द्वारा शुरू की गई विभिन्न विकासात्मक पहलों की सराहना की और रेलवे के बुनियादी ढांचे को और मजबूत बनाने के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिए। बैठक में यात्री सुविधाओं में सुधार, ट्रेनों एवं रेलवे स्टेशनों में स्वच्छता, ट्रेनों की संख्या और परिचालन में वृद्धि, नई रेल लाइनों का निर्माण, दुर्गम क्षेत्रों में बेहतर रेल संपर्क, रेल ओवरब्रिज एवं अंडरब्रिज का निर्माण, जारी परियोजनाओं को समय पर पूरा करने, विभिन्न स्टेशनों पर ट्रेनों के ठहराव तथा क्षेत्र में राजस्व और रोजगार के अवसर बढ़ाने जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विशेष रूप से चर्चा की गई। पूर्व तट रेलवे के महाप्रबंधक श्री परमेश्वर फुंकवाल ने माननीय सांसदों का स्वागत किया और उनके रचनात्मक सुझावों एवं मार्गदर्शन के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने पूर्व तट रेलवे के कार्य निष्पादन, बुनियादी ढांचा परियोजनाओं की प्रगति, यात्री सेवाओं में सुधार तथा क्षेत्र की माल परिवहन संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए रेलवे द्वारा लगातार उठाए जा रहे कदमों के बारे में समिति को जानकारी दी।

बैठक में संबलपुर रेल मंडल के मंडल रेल प्रबंधक (डीआरएम) के अलावा पूर्व तट रेलवे मुख्यालय के विभिन्न विभागों के प्रमुख मुख्य अधिकारी तथा संबलपुर रेल मंडल के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित रहे।

वरिष्ठ नागरिकों के लिए जारी मंत्रालय का अभियान जागरूकता के लिए कानपुर में हुआ कार्यशाला का आयोजन

सुनील बाजपेई

कानपुर। केंद्र की भाजपा सरकार देश के बुजुर्गों की समस्याओं के खिलाफ सेवा और सहायता में भी कोई कोर कसर बाकी नहीं रख रही है। जिसके लिए कार्यशालाओं और कार्यक्रमों के रूप में आयोजनों का भी दौर लगातार जारी है। इसी क्रम में भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय से अधिकृत शिवा ग्रामोद्योग सेवा संस्थान के क्षेत्रीय संसाधन प्रशिक्षण केंद्र (आर आर टी सी), उत्तर प्रदेश द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में 125 वृद्धजनों ने भाग लिया।

रामा अस्पताल एवं रिसर्च सेंटर, लखनपुर में डिमेंशिया एवं अल्ज़ाइमर रोग के खिलाफ आयोजित इस विस्तृत जागरूकता कार्यक्रम का उद्देश्य वृद्धजनों और उनके परिवारों को उम्र बढ़ने के साथ स्मरण शक्ति में होने वाले बदलावों, डिमेंशिया एवं अल्ज़ाइमर के संभावित लक्षणों और देखभाल के तरीकों के बारे में जागरूक करना था। जिसमें कार्यशाला के आयोजक पूर्ण रूप से सफल भी रहे। वृद्ध लोगों के कल्याण के लिए समस्याओं के खिलाफ आयोजित इस कार्यक्रम में मंत्रालय की वरिष्ठ नागरिक कल्याण संबंधी पहल के अनुरूप जागरूकता, क्षमता निर्माण और सामुदायिक सहयोग के महत्व पर भी जोर दिया गया।

कार्यशाला में पहुंचे अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. ज्ञानेंद्र भदौरिया, यूरोलॉजिस्ट डॉ. अपूर्व शुक्ला, गैस्ट्रो सर्जन डॉ. तरुण, मनोचिकित्सक डॉ. अर्नब देब, कम्युनिटी मेडिसिन विशेषज्ञ डॉ. चंदन तिवारी एवं डॉ. एच.सी. पालिवाल तथा नेफ्रोलॉजिस्ट डॉ. डी.के. सिन्हा आदि चिकित्सा विशेषज्ञों ने रोग की पहचान, संभावित कारणों, जोखिम कम करने के उपायों और परिवार की जिम्मेदारी, परिवार के सदस्यों को वृद्धजनों के व्यवहार एवं स्मरण शक्ति में होने वाले बदलावों को समझने, जरूरत पड़ने पर चिकित्सकीय सहायता लेने और प्रभावित व्यक्ति के साथ धैर्यपूर्ण व्यवहार करने आदि से जुड़े विषयों पर विस्तार पूर्वक जानकारी देकर लोगों को जागरूक किया। शिवा ग्रामोद्योग सेवा संस्थान के संस्थापक एवं सचिव राजेंद्र सिंह नेतृत्व में वृद्ध जनों की समस्याओं के खिलाफ कल्याण के लिए भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के आदेश निर्देश और बुजुर्गों के हित में कल्याणकारी पहल पर आयोजित इस कार्य शाला के माध्यम से वरिष्ठ नागरिकों को सम्मान जनक जीवन देने के लिए स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता, परिवार का सहयोग और समाज की भागीदारी जैसा संदेश भी दिया गया। कार्यक्रम में चार्टर्ड अकाउंटेंट नवीन भार्गव और सामाजिक कार्यकर्ता उदय नारायण त्रिपाठी आदि की भी सहभागिता रही।

सशक्त कौशल को बढ़ावा देना ही रोजगार मेले का उद्देश्य : श्री ओम प्रकाश धनखड़

– आईटीआई झज्जर एट गुढ़ा में मेगा जॉब फेयर आयोजित
– मौके पर ही 470 युवाओं को मौके पर नियुक्ति पत्र मिले

– 356 युवाओं का अप्रेंटिस/रोजगार के लिए हुआ चयन

झज्जर कौशल विकास एवं औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान झज्जर एट गुढ़ा तथा जिला रोजगार विभाग के संयुक्त प्रयास से शुक्रवार को राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, झज्जर एट गुढ़ा के प्रांगण में मेगा जॉब फेयर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में श्री ओमप्रकाश धनखड़ ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। संस्थान के प्राचार्य श्री संदीप अहलावत ने मुख्य अतिथि श्री ओमप्रकाश धनखड़ तथा सभी विशिष्ठ अतिथियों का संस्थान में पहुंचने पर पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि श्री ओमप्रकाश धनखड़ ने मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री ओमप्रकाश धनखड़ ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि जो सोचेगा, वो करेगा समय लगता है, बस सीखना चाहिए और दृढ़ संकल्प और सकारात्मकता के साथ आगे बढ़ते रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज के बदलते समय में हर व्यक्ति को हार्ड स्किल और सॉफ्ट स्किल के साथ-साथ मार्केटिंग स्किल भी सीखनी चाहिए ताकि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ मज़बूत हो।

प्राचार्य श्री संदीप अहलावत ने जानकारी देते हुए कहा कि इस मेगा जॉब फेयर का आयोजन माननीय उपायुक्त महोदया श्रीमती वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में किया जा रहा है। इस मेगा जॉब फेयर में मौके पर ही 470 से अधिक अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र प्रदान किए गए। इसके अतिरिक्त 356 अभ्यर्थियों का चयन अप्रेंटिस व रोजगार हेतु किया गया। केंद्र और प्रदेश सरकार कौशल विकास को बढ़ावा देने की दिशा में प्रभावी रूप से कार्य कर रही है, सरकार की सोच है कि युवा वर्ग अपनी रूचि अनुरूप प्रशिक्षण लेकर हुनरमंद बनें, इसके लिए सरकार द्वारा अनेक योजनाएं क्रियान्वित की गई हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023